भारत को पुनः विश्व गुरु
बनाने के लिये
समग्र क्रान्ति चाहिये

भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए समग्र क्रांति चाहिए

आचार्यरत्न कनकनंदीजी गुरुदेव

धर्म-दर्शन-विज्ञान शोध संस्थान ग्रंथांक : 122

पुस्तक का नाम -

भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए समग्र क्रान्ति चाहिए

आयड़–उदयपुर में आयोजित चतुर्थ विराट राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी की पावन बेला में प्रकाशित यह ग्रंथ

प्रवचनकार – आचार्य रत्न कनकनंदीजी गुरूदेव
संकलनकत्री– आ. ऋद्धिश्री माताजी

द्रव्यदाता : अभय कुमार संजय कुमार जी जैन
हरीश ऑयल मिल के पास, गीतानगर
टूण्डला– फिरोजाबाद (यू.पी.)

प्रकाशन – धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान

धर्म–दर्शन–विज्ञान शोध संस्थानका इंटरनेट एवं ई–मेल
w.w.w. Jain kanaknadhi. org.
E-Mail- info @ Jain kanaknadhi. org.

संस्करण– प्रथम– मूल्य –11/–
प्रतियाँ–2000
लेसर टाईप सेटर्स :
श्री कुन्थुसागर ग्राफिक्स सेन्टर 25, शिरोमणि बंगलोज,
सी.टी.एम. चार रस्ता के पास, अहमदाबाद–380026
फोन – 5892744, 5891771

आशीर्वाद – गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरूदेव
सहयोगी– मुनि श्री विद्यानन्दीजी, मुनिश्री आज्ञासागर जी, आ. ऋद्धिश्री
परम शिरोमणि संरक्षक– ''दानश्री'' श्री रमेशचन्द्रजी कोटड़िया
(दानवीर, गुरूभक्त, उद्योगपति प्रतापगढ़, नि. मुंबई, अमेरिका प्रवासी)
अध्यक्ष– 'दानश्री' श्री गुणपाल जी जैन (भूतपूर्व इंजीनियर वर्तमान उद्योगपति)
वरिष्ठोपाध्यक्ष– 'प्रज्ञापुँज' श्री सुशीलचन्द्रजी जैन (एम.एस.सी. भूतपूर्व भौतिक शास्त्र प्रवक्ता) बड़ौत (मेरठ) फो. : (01234) 62845
कार्याध्यक्ष – श्री गुरूचरण एम. जैन (वकील हाइकोर्ट, मुंबई)
उपाध्यक्ष– (1) श्री प्रभातकुमार जी जैन (एम.एस.सी. रसायन शास्त्र)
मुजफ्फरनगर, फो. : (0131) 431998
(2) 'सेवाश्री' राजमल जी पाटोदी (कर्त्तव्यनिष्ठ, सामाजिक कार्यकर्ता, कोटा)
(3) श्री रघुवीर सिंह जैन (एम.एस.सी., एल–एल.वी., रिटायर्ड हेड ऑफ कैमेस्ट्री व प्रिंसीपल डी.ए.वी.पी.जी. कॉलेज)
मानक निर्देशक – 'सरस्वती पुत्र' डा. राजमल जी जैन (अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक)
संयुक्त मंत्री – श्री पंकजकुमार जी जैन (वी.एस.सी.) बड़ौत
प्रकाशन एवं प्राप्ति स्थान–
(1) श्री सुशीलचन्द्र जी जैन,
'धर्म–दर्शन–विज्ञान शोध संस्थान' निकट दि. जैन धर्मशाला, बड़ौत (यु.पी.)
(2) श्री गुणपालजी जैन,
वेहड़ा भवन 87/1 कुंदनपुरा मुजफ्फरनगर (यु.पी.) फो नं. : (0131) 450229
(3) श्रीमती रत्नमाला जैन C/o डो. राजमल जी जैन,
4–5 आदर्श कॉलोनी पुला उदयपुर (राज.) फो. नं. (0294) 440793
(4) श्रीमती लक्ष्मीगुरुचरण जी जैन,
144 मुवी टावर नीयर, मिल्लतनगर लोखण्डवाला कॉम्पलेक्स, अंधेरी (वे.)
मुंबई फोन नं. : (022) 6327152, 6312124, 63271152
(5) 'सेवाश्री' सुरेखा जैन (शिक्षिका) w/o वीरेन्द्रकुमार डालचन्द जी गड़िया कपड़े के व्यापारी – सलुम्बर जि. उदयपुर–313001 फो.: (02906) 32043
(6) श्री महावीर कुमार जैन, 13 अग्रसेन कॉलोनी, दादावाड़ी कोटा फो. : 410818
(7) धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान
C/o चन्द्रप्रभु मंदिर, आयड़, छोटूलाल चित्तोड़ा, आयड़ बस स्टोप के पास,
उदयपुर–313001 (राज.) फोन न. 413565

प्राक्-कथनम्

सत्साहित्य के पठन-पाठन एवं श्रवण को स्वाध्याय कहते हैं। स्वाध्याय को सभी धर्म शास्त्रों में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। स्वामी विवेकानन्द की मान्यता थी कि स्वाध्याय एवं विद्या अध्ययन के अभाव में धर्म का ह्रास हो जाता है।

आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए संत-समागम आसानी से प्राप्त नहीं होता। इस संत-समागम की पूर्ति सत्साहित्य को पढ़ने से हो सकती है। सत्साहित्य का अध्ययन करने के बाद हमारी पतित, भ्रमित आत्मा परमात्मा बनने लायक हो जाती है। मन के कुविचारों को सद्विचारों में बदलने का काम सत्साहित्य ही कर सकता है। सत्साहित्य आत्म निरीक्षण आत्मविश्लेषण करने का अचूक, अमोघ उपाय है। सत्साहित्य एक स्वच्छ दर्पण की भाँति होता है, जो हमारे मन में छिपे दोषों को प्रकट कर देता हैं एवं विषय वासनाओं की कालिमा को दूर कर देता है।

जितना लाभ हमें सत्साहित्य के पढ़ने से होता है कभी-कभी उससे भी अधिक हानि हमारी अजानकारी के कारण असत् साहित्य पढ़ने से हो जाती है इसीलिए बहुत ही सोच-समझकर साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। साहित्य के पढ़ने से पूर्व में लेखक, उसके उद्देश्य, उसकी भाषाशैली, लेखनशैली, व्याकरण ज्ञान आदि बातों की सही जानकारी का पूर्ण परिज्ञान होना चाहिए।

इस कृति के प्रवचनकार आचार्य गुरुवर कनकनंदीजी गुरुदेव है। उनके उद्देश्य, लेखनशैली, भाषा शैली, व्याकरण का ज्ञान, ऋतम्भरा प्रज्ञा का परिज्ञान मैं मंदबुद्धि अल्पज्ञ क्या कर सकती हूँ। गूंगे की शर्करा वाली बात है कि गूंगा व्यक्ति है। उसको शक्कर की मिठास से सुख का आभास तो हो रहा है लेकिन उस मिठास के सुख का वर्णन नहीं कर पाता। उसी प्रकार मैं अल्पज्ञ, मंदबुद्धि गुरुदेव की विशाल क्षयोपशम शक्ति, उनके सत्य, प्रामाणिक, प्रायोगिक अनुभव हर क्षेत्र में,हर दृष्टि से बुद्धि – ज्ञान का अपूर्व, अलौकिक क्षयोपशम शक्ति को देखकर मन ही मन बहुत ही आश्चर्य करती हूँ लेकिन गुरुदेव के इतने विशद, अनुपम, अलौकिक गुणों का वर्णन नहीं कर पाती। कर भी कैसे पाऊँगी ? क्योंकि "कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तैली"। गुरुदेव की अमृतमयी, मधुर वाणी जीवन्त शब्दों का पिटारा

है। उनका चिन्तन – मनन– लेखन अपूर्व ही है। गुरुदेव के मुखारविन्द से निकले शब्द प्रायोगिक अनुभव के जीवन्त शब्दांश है। उनका चिंतम -मनन - लेखन, विचार, अभिव्यक्ति, प्रायोगिक अनुभव केवल किसी निर्जन गिरि कंदरओं के बीच बैठकर नहीं हुए बल्कि विशाल जन समूह के बीच नगर – नगर, गाँव-गाँव से गुजरे, परिभ्रमण के जीवन्त प्रायोगिक अनुभव है। इतना ही नहीं गुरुदेव के अनुभव निरक्षर से लेकर वैज्ञानिक तक के सम्पर्क एवं विचार विमर्श तथा देश-विदेश के धर्म, दर्शन, विज्ञान, कानून, इतिहास के अध्ययन चिंतन-मनन का शोध-बोध ज्ञान है।

गुरुदेव अपने प्रायोगिक अनुभवों को चैतन्य इंसानों में बाँटना चाहते हैं। गुरुदेव का यह निमन्त्रण किसी एक जाति, एक संप्रदाय, वर्ग विशेष पूंजीपति के प्रति नहीं है बल्कि सत्य-जिज्ञासु आत्म-पिपासुओं के लिए यह निमंत्रण है। गुरुदेव की दृष्टि कल्पित भगवान पर नहीं बल्कि जीवित इंसानों पर अधिक है। गुरुदेव स्वर्ग जाने की बात नहीं करते बल्कि स्वयं के अन्तर में स्वर्ग उतारने की बात करते है।

गुरुदेव पुरानी, रुढ़ि मिथ्या मान्यताओं के एकदम सख्त खिलाफ है। वे चारित्रिक, बौद्धिक, आत्मिक, आध्यात्मिक, आत्म विकास की बात ठोस कदमों के साथ करते हैं एवं दूसरों से करवाने के लिए बाल्यावस्था से अभीतकभी चिन्तित है। वास्तविक रूप से गुरुदेव की अन्तरंग पीड़ा को अभी कोई समझ नहीं पाया है।

मैं श्री वीर प्रभू के एवं गुरुदेव के पावन चरण कमलों में बैठकर यही मंगल शुभ भावनायें – कामनायें करती हूँ कि जिनके अन्दर अनेकांत दृष्टि के साथ, शान्तमन से जिज्ञासा पूर्वक सत्य-तथ्य को जानने और परमात्म तत्व के आत्मसात् करने की प्यास है वे गुरु देव की इस कृति को पढ़े, गुरुदेव का प्रत्यक्ष दर्शन करें यही मेरी सभी जीवों के प्रति मंगल शुभ भावनायें, कामनायें है।

आ. ऋद्धिश्री

'आचार्य श्री कनकनंदी द्वारा रचित ग्रन्थ'

		मूल्य
	अ	
1.	अनेकांत सिद्धान्त (द्वि.सं.)	41/-
2.	अहिंसामृतम्	15/-
3.	अति मानवीय शक्ति (द्वि.सं.)	31/-
4.	अयोध्या का पौराणिक, ऐतिहासिक एवं राजनैतिक विश्लेषण	11/-
5.	अग्नि परीक्षा	11/-
6.	अनेकांत के प्रकाश में मोक्षमार्ग	21/-
7.	अनुपरागमन पथः मोक्षमार्ग	5/-
8.	अनुभव चिन्तामणि	10/-
	आ	
1.	आत्मोत्थानोपायः तपः	9/-
2.	आ. कनकनंदी की दृष्टि में शिक्षा	11/-
3.	आदर्श विहार आहार विचार	35/-
4.	आदर्श नागरिक की प्रायोगिक क्रियाएँ	5/-
5.	[illegible] से अस्पृश्य	9/-
6.	[illegible] विधि (हिन्दी, मराठी)	
	इ	
1.	[illegible]	51/-
	उ	
1.	[illegible] का दार्शनिक वैज्ञानिक विश्लेषण	15/-
2.	[illegible] (हिन्दी, कन्नड़)	15/-
	ऋ	
1.	ऋषभपुत्र भरत से भारत (द्वि.सं.)	21/-
	क	
1.	क्रांति के आयाम (द्वि.सं.)	21/-
2.	कर्म का दार्शनिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण (द्वि.सं.)	45/-

3.	कथा सुमन मालिका	15/-
4.	कथा सौरभ	21/-
5.	कथा पारिजात	15/-
6.	कथा पुष्पांजलि	15/-
7.	कथा चिंतामणि	11/-
8.	कथा त्रिवेणी	8/-
9.	क्रान्ति दृष्टा प्रवचन	11/-
	ग	
1.	गुरु अर्चना	3/-
	ज	
1.	जीने की कला	7/-
2.	ज्वलंत शंकाओं का शीतल समाधान (द्वि.सं.)	41/-
3.	जैन धर्मावलम्बी संख्या और उपलब्धि	21/-
4.	जीवन्त धर्म सेवा धर्म	11/-
5.	जिनार्चना पुष्प (1) (तृ.सं.)	51/-
6.	जिनार्चना पुष्प (2)	21/-
	त	
1.	तत्वानुचिंतन	5/-
	द	
1.	दिगंबर जैन साधु नग्न क्यों (उर्दू)	11/-
2.	दसण मूलो धम्मो तहा संसार मूल हेदुं मिच्छतं	15/-
3.	दिगंबर साधु का नगनत्व एवं केशलोंच (हिन्दी, मराठी, गुजराती)	5/-
	ध	
1.	धर्म विज्ञान बिन्दु	15/-
2.	धर्म ज्ञान एवं विज्ञान	15/-
3.	धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान पुष्प (1) (द्वि.सं.)	20/-
4.	धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान पुष्प (2) (द्वि.सं.)	51/-
5.	धर्म दर्शन विज्ञान प्रवेशिका पु. (1) (प्र.सं.)	10/-

6. धार्मिक कुरीतियों का परिशोधन 5/-
7. धर्म प्रवर्तक चौबीस तीर्थंकर (द्वि.सं.) 11/-
8. धर्म दर्शन विज्ञान प्रवेशिका पु.(2) (द्वि.सं.) 15/-
9. धर्म दर्शन विज्ञान प्रवेशिका पु. (3) (तृ.सं.) 21/-
10. ध्यान का वैज्ञानिक विश्लेषण (द्वि.सं.) 21/-

न

1. नग्न सत्य का दिग्दर्शन 15/-
2. नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान 20/-
3. निमित्त उपादान मीमांसा (द्वि.सं.) 9/-

प

1. पुण्यपाप मीमांसा (द्वि.) 15/-
2. पार्श्वनाथका तपोपसर्ग केवल्य धाम बिजौलिया 15/-
3. पूजा से मोक्ष, पुण्य तथा पाप भी 21/-
4. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय 101/-

ब

1. 72 कलाएँ 5/-
2. बाल बोध जैनधर्म 7/-
3. बंधु बंधन के मूल 61/-

भ

1. भाग्य एवं पुरुषार्थ 15/-
2. भारतीय आर्य कौन–कहाँ से, कब से, कहाँ के? 21/-
3. भाव एवं भाग्य तथा अंग विज्ञान 151/-
4. भविष्य फल विज्ञान 101/-
5. भगवान महावीर उनका दिव्य संदेश 5/-
6. भारत को पुनः विश्वगुरुबनाने के लिए समग्र क्रांति चाहिए 15/-

म

1. मनन एवं प्रवचन 5/-
2. मंत्र विज्ञान (द्वि.सं.) 25/-
3. मानवीय निकृष्ठ संघर्ष का इतिहास 10/-

य

1. युग निर्माता भ. ऋषभदेव 15/-
2. युग निर्माता भ. ऋषभदेव (द्वि.सं.) 41/-
3. युग निर्माता भ. ऋषभदेव (पद्यानुवाद) 5/-
4. ये कैसे धर्मात्मा–निर्व्यसनी–राष्ट्रसेवी 11/-
5. युग निर्माता भ. ऋषभदेव (अंग्रेजी) 51/-

ल

1. लेश्या मनोविज्ञान (द्वि.सं.) 11/-

व

1. विनय मोक्ष द्वार 6/-
2. विश्व विज्ञान रहस्य 100/-
3. विश्व इतिहास 25/-
4. विश्व धर्म सभा समवशरण 21/-
5. विश्व धर्म विज्ञान (द्रव्य संग्रह) 41/-
6. व्यसन का धार्मिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण (तृ.सं.) 30/-
7. विश्वशांति के अमोध उपाय (द्वि.सं.) 10/-

श

1. शकुन विज्ञान 30/-
2. शाश्वत समस्याओं का समाधान 18/-
3. शिक्षा – शोधक 15/-
4. शिक्षा शोधक स्मारिका (तृतीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी) 10/-
5. शान्ति–क्रान्ति के विश्वनेता बनने के उपाय 51/-

स

1. संगठन के सूत्र (द्वि.सं.) 25/-
2. संस्कार (हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़) 5/-
3. संस्कार (गुजराती)
4. संस्कार (वृहत्) 30/-
5. स्वप्न विज्ञान (द्वि.सं.) 51/-
6. सर्वांग विज्ञान की वैज्ञानिक गवेषणा 151/-
6. संस्कार सच्चरित्र (तृ.सं.) 11/-

7. स्वतन्त्रता के सूत्र 71/-
8. सत्य धर्म 5/-
9. सत्य धर्म सुखामृतम् प्रवचनसार 301/-
10. सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (वृहत्) 201/-
11. सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (छोटा) 21/-
12. सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (छोटा) मराठी 10/-
13. स्मारिका (प्रथम संगोष्ठी) 81/-
14. स्मारिका (द्वितीय संगोष्ठी) 51/-
15. सत्यन्वेषी आ.कनकनन्दी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 5/-
16. संस्कृति की विकृति 10/-

ह

1. हिंसामय यज्ञ का प्रारम्भ क्यों 7/-

क्ष

1. क्षमा वीरस्य भूषणम् (तृ.सं.) 21/-

त्र

1. त्रैलोक्य पूज्य ब्रह्मचर्य (द्वि.सं.) 25/-

श्र

1. श्रमण संघ संहिता 30/-

F

1. Fate and Efforts 15/-

L

1. Leshya Psychology 11/-

N

1. Nakedness of Digamber Jain Saints and Kesh - Lonch (तृ.सं.) 5/-

P

1. Philosophy of Scientific Religion 21/-

W

1. What Kinds of 'DHARMATMA' (Plourman) There are 21/-

धर्म–दर्शन विज्ञान शोध संस्थान

समर्पित कार्यकर्ता शिविर आयड, उदयपुर

(सानिध्य एवं प्रशिक्षक आचार्य कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ)

दिनांक 18–9–2000 से 23–9–2000

स्थान : चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन धर्मशाला आयड़

क्र.	नाम शिविरार्थी भय पता	शैक्षणिक योग्यता	दूरभाष	कार्यरत विभाग
1.	श्री डॉ. नारायणलालजी कच्छारा 55, रविन्द्रनगर उदयपुर	पी.एच.डी.	491422	सेवा निवृत्त आचार्य निदेशक
2.	श्री हनुमानसिंह वर्डिया, 79, सी., अम्बामाता स्कीम उदयपुर	एम.ए. (समाजशास्त्र)	431640 430023	सेवा निवृत्त सह–आचार्य, समाजशास्त्र
3.	श्री अमृतलालजी जैन 4/304 अशोकनगर रोड नं.4 उदयपुर	स्नातक, समाज सेवा–विद् तृ.वर्ष शिक्षण आरएसएस	413332	सेवा निवृत्त प्रबन्धक भा.जीवन बीमा निगम
4.	श्री डॉ. महावीर प्रसाद जैन 128,अशोकनगर उदयपुर	एम.ए. इतिहास	414081 412746	से.नि.उपाचार्य मीरा कन्या म.वि.
5.	श्री कुन्थुकुमार जैन 5, आदिनाथ कॉलोनी, युनि. रोड, केशवनगर, उदयपुर	मेट्रिक	521342	से.नि. व्यवसायी
6.	श्री भूरीलाल जैन 23, टेगोर नगर, हिरणमगरी से.नं.4, उदयपुर	हायर सेकन्डरी	460930	निरीक्षक भूप्रबंध विभाग, उदयपुर
7.	श्री हीरालालजी जैन 27 एकलिंग कोलोनी, हिरणमगरी, से.नं.3, उदयपुर	डिप.इन मेकेनिकल इन्जी.	460099	से.नि. सहायक अभियन्ता सिचाई विभाग
8.	श्री शंकरलालजी खंडवा 1 व 14 के पास गायत्री नगर हिरणमगरी से.नं. 5 उदयपुर	एम.ए. समाज शास्त्र राजनीति शास्त्र,बीएड	464969	से.नि. प्रधानाचार्य

9. श्री संतोषकुमार चित्तोड़ा 35, गोकुलपुरा उत्तरी आयड उदयपुर	बी.ए.आर.एन.सी.	418205	से.नि. कम्पाउण्डर
10. श्री कनकमलजी हाडोतिया 292, हिरणमगरी,से.नं.4 उदयपुर	एम.ए. (भूगोल)	460812	सेवारत अध्यापक
11 श्री प्रतापसिंह चित्तोड़ा इन्द्रभवन, गोकुलपुरा उत्तरी आयड, उदयपुर	मेट्रिक	418206	सेवारत जनदाय विभाग
12 श्री छोटुलालजी चित्तोड़ा 121, उत्तरी आयड उदयपुर	पी.यु.सी. सायन्स डिप.इले.इन्जि.	413565	सेवारत प्रावेधिक शिक्षा विभाग
13 श्री सोहनलालजी देवडा 586, हिरणमगरी से.नं.4, उदयपुर	मेट्रिक, एस.टी.सी.	461551	से.नि. अध्यापक
14 श्री विमल गोध 52, अशोकनगर उदयपुर	डिप.सिविल इन्जि.	14186	पांच प्रतिमाधारी सामाजिक कार्यकर
15 श्री लक्ष्मीलाल दोशी एल-3/56, जयश्री कॉलोनी धूलकोट, उदयपुर	एम.एस.सी.एम.एल.	409472	व्याख्याता बी.एन. स्कूल उदयपुर
16 श्री राजमल लोलावत 6 ब/3 रामसिंह की वाडी हिरणमगरी, से.नं. 11 उदयपुर	बी.ए.एल.एल.बी. डी.एल.एल.	483115	से.नि. सुपरवाइजर हिन्दुस्तान झिंक उदयपुर
17 श्री ब्रजलाल जैन 18, गोकुलपुरा, उत्तरी आयड उदयपुर	साहित्य रत्न एस.टी.सी.	410934	से.नि. अध्यापक

आचार्य श्री के इस मानवतावादी संस्कृति के प्रचार-प्रसार में तन-मन से समर्पित कार्यकर्ता ही सच्चे धर्म के सेवक व जन कल्याण को वेग देने वाले हैं। आप सब इस यज्ञ में अपनी सेवा की आहुति देकर सहयोगी बने।

धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान

(आचार्य श्री कनकनंदीजी द्वारा आर्शीवाद प्राप्त) उदयपुर

संस्थान की उदयपुर शाखा के कार्यक्रम

1. **व्यसन मुक्ति** – तम्बाकू, गुटका, बीड़ी, सिगरेट, नशीलें पदार्थ, मांसाहार, मदिरापान, जुआँ आदि व्यसनों से मुक्ति हेतु प्रयास।
2. **आगम साहित्य सेवा** – जैन आगम व सद्साहित्य का प्रचार प्रसार।
3. **वनवासी समग्र विकास** – उपेक्षित वनवासी समाज के विकास के लिए विभिन्न कार्य।
4. **शैक्षिक उन्नयन कार्यो में सहकार** – समाज द्वारा किये जा रहे शैक्षिक उन्नयन कार्यो में सहकार।
5. **दहेज प्रथा** – दहेज प्रथा के विरोध में जन जागरण।
6. **मृत्यु भोज** – अविवेकपूर्ण मृत्यु भोज बन्द करना।
7. **बाल विवाह** – बाल विवाह का विरोध करना तथा उन्हें रोकना।
8. **भ्रूण हत्या** – भ्रूण हत्या के विरोध में जनमत तैयार करना तथा लोगों को शिक्षित करना।
9. **आडम्बर व अपव्यय का विरोध** – विवाह तथा अन्य अवसरों पर आडम्बर और अपव्यय का विरोध करना।
10. **प्रचार-प्रसार** – संस्थान के कार्यो का लोक प्रेरणा हेतु प्रचार प्रसार करना।
11. **नियमित बैठक तथा प्रगति की समीक्षा** – संस्थान की नियमित बैठक में कार्यो की समीक्षा कर योजनाओं की निरन्तर प्रगति सुनिश्चित करना।

गुरु सेवा का फल

''उच्चै र्गोत्रं प्रणतेर्भोगो दानादुपासनात्पूजा।
भक्तैः सुन्दररूपं स्तवमात्कीर्तिस्तपो निधिषु॥15॥''

गुरुओं को प्रणाम करने से उच्च गोत्र की प्राप्ति होती है, दान देने से उत्तमोत्तम भोगों की प्राप्ति होती है, उपासना करने से स्वयं की पूजा होती है। भक्ति करने से कामदेव सदृश्य लावण्य युक्त सुन्दर शरीर की प्राप्ति होती है, स्तवन करने से कीर्ति दशों दिशाओं में फैलती है। (श्रावकाचार – समन्तभद्राचार्य)

अनुक्रमणिका

विषय	पृ.सं.
1. भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए समग्र क्रांति चाहिए	1
2. पापों का प्रक्षालन होता है – प्रायश्चित्त के द्वारा	6
3. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा एवं संस्कारों की महती आवश्यकता	10
4. रक्षासूत्र के दो धागे – वात्सल्य एवं संगठन	12
5. मनुष्य का उत्थान–पतन मनःस्थिति पर निर्भर है	19
6. परतंत्रता की ओर बढ़ते हुए भारत को स्वतंत्र बनाना है	25
7. नारायण श्रीकृष्ण का बहुआयामी व्यक्तित्व	33

संत समागम में आ. श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

1. भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए समग्र क्रांति चाहिए

उदयपुर कृषि महाविद्यालय में परम पूज्य आचार्यरत्न कनकनंदी जी गुरुदेव ने कहा कि आज के भोग विलासी, भौतिकवादी युग में अनैतिकता से सभी त्रस्त है। भारत देश की अनेकों समस्याओं में अनैतिकता भी मूल कारण है। आज का मानव परमार्थ की अपेक्षा स्वार्थ पर अधिक बल देता है इसीलिए अनैतिकता का साम्राज्य चारों ओर छाया हुआ है। अनैतिक स्वार्थी प्रवृत्तियों के कारण ही भारत वर्ष हजारों वर्षों से गुलाम है। एक बार विवेकानंद से किसी ने प्रश्न किया कि ज्ञान–विज्ञान का देश, अनेकों आविष्कारों का देश यह विश्वगुरु भारत गुलाम कैसे रहा ? तो विवेकानंद ने उत्तर दिया कि जिसके पास बंदूक है लेकिन वह उस बंदूक को चलाना नहीं जानता है तो उस बंदूक की क्या उपयोगिता ? दूसरें व्यक्ति के पास लाठी है लेकिन वह लाठी का प्रयोग, उपयोग करना जानता है तो लाठी वाला बंदूक वाले को परास्त कर सकता है। यही हाल हमारे भारतवासियों की गुलामी का रहा। विदेशी आक्रान्ता मुट्ठी भर थे, भारतीय हजारों की संख्या में थे लेकिन मुट्ठी भर लोगों से परास्त हो गये। आपसी फूट, कलह, वैमनस्य, अनैतिकता के कारण हमारे भारत देश में समस्त उपलब्धियाँ थी लेकिन आज वे सम्पूर्ण उपलब्धियाँ विदेशी लोगों के पास जा चुकी है। हमारे पतन का कारण विदेशी आक्रान्ता कम, बल्कि हम भारतवासी अधिक हैं। हम धर्म, ग्रन्थ, पंथ, संत के नाम पर आपस में लड़ते मरते झगड़ते रहे।

जितने भी धार्मिक लोग होते है वे ही अधिक ढोंगी, दम्भी, पापी, क्रूर, निष्ठुर होते हैं।जो लोग बाहर मंचों पर जाकर लम्बी–लम्बी बड़ी–बड़ी बातें करते है वही लोग देश में, समाज में, परिवार में सभी जगह अधिक दूषित वातावरण तैयार करते हैं। जो शिक्षित होते हैं, बड़े प्रोफेसर्स, लेक्चर है उनको भी शिक्षा के नाम पर अ, आ नहीं आता। नैतिकता, सदाचार क्या होता है ठीक रूप में उनको भी नहीं आता। तब बच्चों के अंदर नैतिकता, सदाचार सद्गुणों के क्या संस्कार देगें। इसीलिए आज शिक्षा में अनेकों त्रुटियाँ, विकृतियाँ घर कर रही है। शिक्षा का रूप कुशिक्षा में बदल गया।

प्राचीन कालीन जो शिक्षा गुरुकुल में बच्चें को दी जाती थी उस शिक्षा से बालक गुरु भक्त, विनयी, परोपकारी, स्वावलम्बी, कर्तव्यनिष्ठ बनता था। लेकिन आज उस शिक्षा का रूप ही बदल गया है। जब तक हमारे बच्चे कान्वेन्ट स्कूल में नहीं जायेगे तब तक शिक्षित ही नहीं होगे यह विचारधारा आज प्रत्येक भारतीय की बनी हुई है। हम अंग्रेजों की कूटनीति को आज भी नहीं समझ पाये अंग्रेज तो चले गये लेकिन अंग्रेजों की दासता की जंजीरों में हम आज भी बँधे हुए हैं। लार्ड मेकाले की शिक्षा पद्धति का मूल उद्देश्य नैतिक, मानवीय गुणों से कुछ लेन-देन नहीं था। उनका उद्देश्य भारतीयों के नैतिक, मानवीय गुणों का ह्रास करना था। इसीलिए तो आज बच्चें आधुनिक शिक्षा पाकर अधिक उदण्ड, उत्श्रृंखल, अविनयी, परावलम्बी हो रहे हैं। आज महाविद्यालय के बड़े-बड़े बच्चें तो हाथ में एक किताब लेकर जायेगें और छोटे-छोटे मासूम बच्चें अपने वजन से भी अधिक वजन का बस्ता लेकर पढ़ने जाते हैं। क्या यही शिक्षा का अर्थ, महत्व उद्देश्य है? आज हम एक गमले में पौधा लगाकर बड़े वृक्ष की कामना कर रहे हैं। जिस प्रकार गमले में लगे पौधे का कोई विकास नहीं होता उसी प्रकार छोटे-छोटे मासूम बच्चों को बड़े-बड़े बस्तें देकर आप ने उनका मानसिक, शारीरिक, आत्मिक, नैतिक सभी प्रकार का विकास रोककर विनाश कर दिया है। आप सभी की मनोभावना इस प्रकार की बनी हुई है कि हमारा बच्चा हर समय किताबी कीड़ा बनकर किताबों में कैद रहेगा तभी वह शिक्षित बन पायेगा। लेकिन यह सोच बिलकुल गलत है। बच्चे को जितना स्वतंत्र रखा जाये उतना ही उसका हर प्रकार का विकास-स्तर बढ़ता है।

एक बीज को आप खुले, स्वतन्त्र वातावरण में प्रकृति के नीचे अंकुरित कीजिए और दूसरें बीज को गमले में अंकुरित कीजिए अधिक विकास किसका होगा? गमले का या प्रकृति की गोद पाने वाले का?

इसी प्रकार पहले की गुरुकुल शिक्षण प्रणाली और वर्तमान की आधुनिक शिक्षण प्रणाली का यही अंतर है। महान् वैज्ञानिक आविष्कारकर्ता आइन्स्टीन के पास केवल एक कापी, पेन्सिल थी उसी कापी पेन्सिल वाले व्यक्ति ने इस जगत को बड़े-बड़े महान सिद्धांत दिये। अमेरिका के महान् राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन के पास पढ़ाई के लिए रोशनी एवं लिखने के लिए कलम भी नसीब नहीं थी। उनकी माँ रात्रि के समय चूल्हे पर खाना बनाते बनाते लाल कोयले से पढ़ाती थी।

टामस एल्वा एडीसन जिनके आविष्कारों से आज सम्पूर्ण विश्व प्रभावित एवं प्रकाशित है। बचपन में कुछ भी नहीं पढ़ते थे लेकिन आगे चलकर सम्पूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित करने वाले सबसे अधिक आविष्कार किये। जार्ज स्टीफेंशन जो कि बचपन में कभी स्कूल ही नहीं गये भाप की शक्ति का आविष्कार किया। ऐसे एक नहीं अनेकों उदाहरण इतिहास के पृष्ठों में मिलते हैं। जिन्होंने बचपन में अध्ययन नहीं किया लेकिन आगे चलकर वही महान वैज्ञानिक, ज्योतिषि, आयुर्वेदाचार्य, पंडित, राजनेता, धार्मिक संत-महन्त पुरुष हुए। तो यह बात पूर्ण रुपेण असत्य होती है कि आप परिवारजन, शिक्षक वर्ग, सरकार सभी मिलकर बच्चों का शोषण कर रहे हैं।

आज छात्र असन्तोष का कारण यही है। आज छात्र जगह-जगह असहयोग, आन्दोलन, तोड़-फोड़ इसी कारण करते हैं कि उनके विकास क्रम को रोक दिया गया। बिना पढ़े लिखे माँ-बाप के बच्चे कान्वेन्ट स्कूल में जाकर ए.बी.सी.डी. के चार अक्षर पढ़ लेंगे तो माँ-बाप उनको सिर पर बिठाने लगते है, उनको कोई कार्य नहीं करने देते। यह क्या है? यही तो हम उनको परावलम्बी, नौकर बनने की शिक्षा देते हैं। क्या ऐसी स्थिति में प्रतिभाओं को जन्म मिल सकता है? अन्य देशो में पढ़ाई करने वाले केवल वही जाते है जो कठिन परिश्रम करना जानते हैं एवं कठिन परिश्रम करते हैं। जिनके ऊपर कोई भार नहीं, जिम्मेदारी नहीं वह तो उद्दण्ड उत्श्रृंखल, अविनयी बनेगा ही। भारत देश के माँ-पिता तो अपने बच्चों को स्कूल छोड़ने जायेगें, लेने जायेगे उसका फार्म भी स्वयं ही भरेगें, जमा करेगे आदि छोटे-छोटे कार्यों को भी बच्चों से नहीं करवाते इसप्रकार किस तरह से बच्चों के अंदर कर्त्तव्यनिष्ठा, स्वावलम्बन की भावना पैदा हो और वे कठिन कार्य करने के अभ्यस्त बनें। आज शिक्षा के ऊपर अरबों रूपया खर्च किया जा रहा है। लेकिन 99% रावण ही बन रहे हैं। 'विद्या ददाति विनयं' यह सूत्र समाप्त हो गया है। शूट-बूट, टाई पहनकर स्वयं को अप टू डेट मानते हैं लेकिन अप टू डेट का वास्तविक अर्थ क्या होता है यह जानते भी नहीं। भारतीय सभ्यता संस्कृति को अपनाते नहीं है लेकिन उसके गीत गाते हैं। विदेशी सभ्यता संस्कृति को अपनाते हैं और उसी की बुराईयां करते हैं। पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी को गलत बताती है तो नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी को असभ्य, गलत साबित करती है? आखिर ये ऐसा क्यों? मैं इस बात को बिल्कुल पसन्द नहीं करता क्योंकि जो गतिशील हो वही

परिवर्तन ठीक है। किसी के ऊपर दोषारोपण करना ठीक नहीं। प्रत्येक बात से अच्छी बात ग्रहण करनी चाहिए एवं बुरी बातों का निराकरण करना यही सच्चा शोध-बोध विवेक की जागृति का परिचय है। प्रत्येक क्रिया के पीछे प्रतिक्रिया होती है। एकांगी दृष्टि कोण हमेशा गलत असत्य होता है। प्रत्येक कार्य चतुआयाम सिद्धान्त (द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव) से होता है। हम सभी संकीर्णता, कूपमण्डूकता का जीवन जी रहे हैं इसीलिए तो विकास की जगह विनाश हो रहा है।

इस विनाश को रोकने हेतु समग्र क्रांति चाहिए। केवल कानून, राजनीति बदलने से कुछ नहीं होगा। इसीलिए तो 100 करोड़ व्यक्तियों को 100 नेता हिला रहे हैं। हम घर में भाई-भाई की, पिता-पुत्र की, सास-बहु की, नारी-नारी की हत्या कर रहे हैं और देश के नाम पर, प्रगति में सहयोग देने के लिए, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, पापाचार, अंधविश्वास, रुढ़िवादी कुरीतियों को मिटाने के नाम पर अहिंसावादी बनकर परस्परोपग्रहो जीवानाम् का ढोंग रचायेंगे। धर्म के नाम पर रस त्याग, उपवास करेंगे लेकिन व्यापार में डालडा में चर्बी, चावलों में कंकड पत्थर, मिलायेगें दहेज के लिए बहू की हत्या करेंगे, बेटी का गर्भपात करायेगे यह सब आखिर क्या है ? भारतीय लोग कहते है भारत धर्म प्रधान देश है लेकिन यह सब देखकर मैं तो यही कहता हूँ कि धर्म प्रधान नहीं बल्कि धन प्रधान है। आज गृहस्थ तो क्या प्रायः साधु भी परिग्रही हैं। यश किर्ती की अभिलाषा में सच्चे धर्म को भूल रहे हैं। धर्म के नाम पर गरीब जनता का शोषण हो रहा है। तीर्थयात्रा धार्मिक स्थलों पर ढोंग, मायाचार, छल, कपट करके धर्म के नाम पर धन कमा रहे हैं।

इन सब परिस्थितियों को देखकर अगर समग्र सुधार करना है तो एक को नहीं सभी को सुधारना होगा। साधु को वैज्ञानिक बनकर धर्म को विज्ञान से जोड़ना होगा। जब तक धर्म को विज्ञान से नहीं जोड़ा जायेगा तब तक वह धर्म अंधविश्वास की मिथ्या रुढ़िवादी परंपराओं में सड़ता रहेगा। इसीलिए कार्लमार्क्स को कहना पड़ा था कि धर्म की शवयात्रा निकालो, धर्म अफीम की गोली है। वास्तविक धर्म तो वही है जो सत्य-तथ्य का शोध-बोध करावे, एवं प्रेम, उदारता, परोपकार, सहिष्णुता, क्षमा, दया, संवेदनशीलता दिखावे। जिसका मानसिक धरातल उन्नत हो वही यह सब सत्कार्य कर सकता है। आज सभी का मानसिक धरातल निम्न से निम्न है जिनको हम राजनेता मानते हैं प्रजा का राजा मानते हैं, वही सबसे

अधिक गुण्डे, गद्दार, भ्रष्ट, शोषणकारी, बेईमान हैं और हम प्रजा भी ऐसे निकृष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा रख-रखाव के लिए उनके ऊपर करोड़ों रुपया व्यय करके उनको केन्द्र तक पहुँचाती हैं। दूसरी तरफ कोई गरीब व्यक्ति किसी परिस्थितिवश थोड़ा भी अपराध करे तो उसे जेल में पहुँचायेंगे उसका हर तरह से शोषण करेंगे। यह सब मेरा अनुभव हैं। जो कि साक्षरता के कारण ये सब विकृत परम्परायें बढ़ रही है। एक गरीब निरक्षर किसान के अंदर उदारता, सहिष्णुता, परोपकारिता, वात्सल्यता, दया, करुणा, संवेदनशीलता, विनय, नम्रता मिल जायेगी लेकिन जो दो-चार शब्द पढ़कर साक्षर बन जाते हैं उनके अंदर इन सब सद्गुणों का अभाव हो जाता है। वे साक्षर के रुप में राक्षस होते हैं। जिस प्रकार कि रावण, कंस दुर्योधन, नेपोलियन आज के भ्रष्ट गुण्डे, राजनेता, खलनेता, अभिनेता, विश्वसुंदरी आदि पढ़े-लिखे साक्षर के रूप में राक्षस हैं।

मेरे प्रत्यक्ष, सत्य, प्रायोगिक अनुभव है कि जब हम नगर में प्रवेश करते हैं या नगर से विहार करते हैं जब स्कूल, कॉलेज के समीप से निकलते हैं तब दो-चार अक्षर पढने वाले, स्वयं को अप टू डेट मानने वाले हम साधुओं को देखकर हँसते है, गाली देते हैं। यहाँ तक कि कोई-कोई पत्थर तक मारते हैं। जब मैं उनको पहले भारतीय भाषा में कुछ कहता हूँ तो उन पर कुछ असर नहीं होता लेकिन जब अंग्रेजी भाषा में बोलता हूँ तो वे शर्म, लज्जा का अनुभव करते है और क्षमा याचना करते हैं। इन सब बातों को देखकर मुझे बहुत ही पीड़ा होती है कि जो देश विश्व गुरु रहा आज उस देश की सभ्यता-संस्कृति बिल्कुल नष्ट हो गयी है। केवल विदेशी संस्कृति की बुराइयों को हमने ग्रहण कर लिया और स्वयं को अप-टू-डेट, सुधारवादी, पढ़े-लिखे साक्षर मानने लगें।

ये मेरे कटु वचन नहीं बल्कि मेरी बाल्यावस्था से लेकर अभी तक की अन्तरंग गहरी पीड़ा है। आज सभी मेरे इन कटु वचनों को विष ना समझे बल्कि इन कटु वचनों रूपी पीड़ा को अमृत समझे। क्योंकि शिवजी ने असुरों की वृत्ति को नाश करने हेतु विष को पी लिया था और वह विष उनके कंठ रहकर अमृत बन गया था। इसीप्रकार आप सभी मेरे कटुवचनरूपी विष को पचाने की शक्ति रखते हो तो मेरा पूर्ण विश्वास है वह विष भी अमृत का काम करेगा और गारत बने भारत का विकास होकर विश्वगुरु का नया रूप तैयार होगा।

आचार्यश्री ने अंतिम शब्दों में भारत की गतिविधियों के सुधार हेतु सभी को

समग्र क्रांति हेतु सुझाव देते हुए कहा कि इन सब कुरीतियों के लिए केवल एक व्यक्ति ही जिम्मेदार नहीं बल्कि परिवार, समाज, राष्ट्र, बच्चे से अधिक माँ-बाप, विद्यार्थी से बढ़कर शिक्षक, नागरिक से बढ़कर राजनेता आदि का बढ़ता उत्तरदायित्व है। अतः सभी को मिलकर एकता-सहयोग के साथ जागृति लाने के लिए समग्र क्रांति करनी होगी।

2. पापों का प्रक्षालन होता है - प्रायश्चित्त के द्वारा

उदयपुर सेन्ट्रल जेल के सभी केदियों को अपनी मधुर अमृतमयी, ममतामयी, ओजस्वितामयी वाणी के द्वारा संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यरत्न कनकनंदीजी गुरुदेव ने कहा कि- प्रत्येक कार्य के होने में अनेकों कारण सहायक होते हैं। एक बीज से ही अनेकों फल, पुष्प, पत्तों वाला वृक्ष होता है। इसी प्रकार आप सभी के दोषों के पीछे आप ही उत्तरदायी नहीं हो बल्कि आपके दोषों में परिवार, समाज, राष्ट्र सभी जिम्मेदार हैं। एक गरीब व्यक्ति था उसके तीन लड़कियाँ थी। एक दिन वह गरीब व्यक्ति मंदिर में दर्शन करने गया तो मंदिर में एक बड़े धनवान सेठ अपना रत्नों का हार अपने गले से निकालकर हार को समीप रखकर सामायिक कर रहे थे। उस हार को देखकर उस गरीब की भावना उस हार को लेने की होती है कि इस हार के लेने से मेरी तीनों पुत्रियों की शादी हो जायेगी। इसीलिए उसने हार चोरी कर लिया। एकदिन वही गरीब व्यक्ति मंदिर के दर्शन करने गया तो वहाँ पर एक दिगम्बर गुरु थे। वह गरीब व्यक्ति गुरु को देखकर अपने रत्नहार की चोरी करने की बात कहता है तो गुरुजी कहते है तुमने मंदिर में चोरी क्यों की ? उस व्यक्ति ने अपनी गरीब परिस्थिति की बात बतायी कि मैंने इस परिस्थिति के कारण चोरी की लेकिन आप मेरे गुरु हैं मुझे मेरे पाप का प्रायश्चित्त दे। वह प्रायश्चित्त माँग रहा था कि वह सेठ वहीं खड़ा यह सब सुन रहा था। वह सेठजी बीच में ही बोले-- गुरुदेव, इस प्रायश्चित्त का भागीदार यह नहीं बल्कि मैं हूँ क्योंकि मैंने अपने गरीब-दीन-हीन, अनाथ भाई की कभी भी सहायता नहीं की, मेरे पास इतनी धन सम्पत्ति है लेकिन मैंने गरीबों की सहायता नहीं की बल्कि उस धन सम्पत्ति का उपभोग मैंने स्वयं की सुख-सुविधा एवं अपने बच्चों के लिए

व्यय किया अतः इस पाप का प्रायश्चित्त मुझे मिलना चाहिए, लेकिन तभी सेठानी कहने लगी, गुरुदेव! इस पाप का प्रायश्चित्त मुझे मिलना चाहिए क्योंकि मैंने अपने पति की धन सम्पत्ति को अपनी फैशन, शौक, मोज, विलासिता में ही व्यय किया। मैंने दीन, गरीब, अनाथों की सेवा नहीं की इसीलिए प्रायश्चित्त मुझे दो। लेकिन तभी गुरुदेव बोले- इस पाप का प्रायश्चित मुझे मिलना चाहिए ? तीनों बोल उठे, गुरुदेव ! आपने तो कुछ भी नहीं किया फिर आप ऐसा क्यों बोल रहे हैं ? हाँ, मैं सही बोल रहा हूँ क्योंकि गुरु का कार्य होता है कि जो अज्ञानरूपी अंधकार में चल रहा है उसे अज्ञानता से हटाकर ज्ञानरूपी मार्ग पर प्रशस्त करें। आज मैं आप सभी को अपने पापों,अपराधों का बोध कराने आया हूँ।

प्रत्येक प्राणी से अपराध, भूल होना स्वाभाविक है। लेकिन उस अपराध को स्वीकार करना, उसका प्रायश्चित्त करना अपराध नहीं माना जाता। जिस प्रकार हमारा वस्त्र गंदा हो जाता है तो हम उसे स्वच्छ करने के लिए पानी साबुन का प्रयोग करते हैं इसी प्रकार दोषों के प्रति ग्लानि का भाव होना चाहिए उस दोष के निवारण के लिए प्रायश्चित्त करना चाहिए।

हमारे देश के महान-महान नेता जैसे महात्मा गाँधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य तिलक आदि को भी जेल जाना पड़ा। नारायण श्रीकृष्ण का जन्म जेल में ही हुआ, ऐसा कोई निश्चित नहीं कि जो जेल में हो वह पूर्णरूपेण दुर्जन दुष्ट, आततायी, पापाचारी ही हो। मनुष्य से गलती होना स्वाभाविक है। जब तक हम भगवान नहीं बन जाते हैं तब तक इस संसार में दोष होना स्वाभाविक है। लेकिन दोषों का निवारण करना हमारा कर्त्तव्य है। रोगी होना कोई पसंद नहीं करते लेकिन जब रोगी बन जाते हैं तो पथ्य से, दवा से उस रोग का निवारण करते हैं। इसी प्रकार दोषों का प्रक्षालन, पापों का निवारण प्रायश्चित्त के द्वारा करना चाहिए। रत्नाकर डाकू एक बहुत बड़ा निर्दयी डाकू था। लेकिन उन्हें जब से गुरूओं का सत्संग मिला तो उसने डाकू का कार्य करना छोड़ दिया और गुरू से राम-राम जपने का नियम ले लिया। लेकिन उसे राम-राम ये दो शब्द भी याद नहीं होते थे क्योंकि पूर्व अवस्था में वह सभी को मारता रहता था इसलिए राम की बजाय उसके मुँह से मरा-मरा निकलता था। गुरु ने कहा तुम मरा-मरा ही जपो, मरा मरा जपने से ही उसके मुँह से राम राम निकलने लगा और उसने एक दिन महान ग्रंथ रामायण की रचना कर दी। इसी प्रकार

आप सभी के अन्दर भी वह आत्मा परमात्मा के रूप में बैठी हुई है। अगर पुरुषार्थ करेंगें तो दानव से मानव, खुद से खुदा, जीव से जिन, डॉग से गोड, हीयमान से वर्द्धमान बन जायेंगे।

आप सभी के सफेद वस्त्र इस बात का प्रतिक है कि जिस प्रकार सफेद वस्त्र स्वच्छ साफ पवित्र दिखाई देता एवं उस पर जरा भी गन्दगी लग जाए तो वह स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसी प्रकार हमारा जीवन सफेद वस्त्र की तरह पवित्र-पावन, सहज-सरल होता है। अगर उसमें किञ्चित् भी अपवित्रता, दोष, दुर्गुण, अपराधों का समावेश हो जाता हैं तो जीवन अशान्त, दुःखी हो जाता हैं।

हम अपने भाग्य के निर्माता स्वयं हैं। जिस प्रकार कर्म करेंगे उसी प्रकार फल की प्राप्ति होगी। बबूल के वृक्ष से काटें ही हाथ लगेगे। आम के बीज बोने पर मीठे आमों की ही प्राप्ति होगी। इसलिए आप सभी को सतत् आध्यात्मिक के प्रयास से स्वयं का सुधार करना होगा। अन्तरंग मन से अपने दोषों का प्रायश्चित्त करना होगा। अंग्रेजों की दृष्टि में महान क्रान्तिकारी नेता भी दोषी थे लेकिन दोषी स्वयं अंग्रेज ही थे। इसी प्रकार आप कम दोषी हो लेकिन केन्द्र सरकार, राज्य सरकार में बैठे नेता आप से भी अधिक दोषी हैं। जो भारत देश ज्ञान-विज्ञान का देश, अनेकों आविष्कार कर्ताओं का देश के रूप में विश्व गुरू था आज वहीं देश बड़े-बड़े नेताओं के बड़े-बड़े अपराधों के कारण गारत बनता जा रहा है। आज सामान्य व्यक्तियों के अपराधों को बड़े अपराधों की कोटी में गिना जा रहा हैं और जो बड़े-बड़े अपराध कर रहे हैं उनके अपराधों का जिक्र तक नहीं हैं। कभी-कभी निर्दोषी मारा जाता है और दोषी बच जाता है। ताली दो हाथ से बजती हैं लेकिन एक हाथ स्थिर रहता हैं दूसरा हाथ टकराता है तो आवाज भी आती हैं। इसी प्रकार निर्दोषी को दोषी दबाते रहते हैं। लेकिन सतगुरूओं का कहना है की जो व्यवहार स्वयं को अच्छा नहीं लगता वह व्यवहार तुम दूसरों के साथ मत करो। वास्तव में यही धर्म है। अगर हमें कोई कष्ट देता है, दुःख देता है फिर भी हमारे भाव उसके प्रति सहिष्णुता के हो तो हमारा जीवन वास्तव में एक आदर्श जीवन हैं। सज्जनों की संगती अमृतवाणी के समान होती हैं। साधु जीवन्त प्रयोगशाला होते हैं। एक बार दयानंद सरस्वती के पास एक धनवान सेठ आया। वह सेठ वेश्या सेवन आदि व्यसनों को करता था। जब वह दयानंद सरस्वती के दर्शन करके जाने लगा तो गुरुजी ने कहा कि तुम किचड़ में लिपटे सोने की तरह हो इस बात

को सुनकर सेठ के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उसने उसी दिन से सभी व्यसनों का त्याग कर दिया। वास्तव में जो पुण्यात्मा होते हैं उन्हीं को संतों का समागम एवं संतों की अमृतवाणी सुनने को मिलती हैं, पापी दुष्ट, दुर्जन व्यक्तियों को नहीं। आप सभी का बहुत ही पुण्य का उदय है लेकिन उस पुण्य का आप सभी को सदुपयोग करना होगा। आप को अन्तरंग से परिवर्तित होना होगा।

आप अपने पुण्य को जगाये, स्वयं का आत्मा का विश्लेषण करें, परिवार, सगे संबंधी, समाज के हितों का ध्यान रखते हुए स्वयं के जीवन के साथ-साथ पर के जीवन को भी पवित्र, आदर्श उज्ज्वल बनायें। प्रकृति ने सूर्य, मिट्टी, वायु आदि पदार्थ सभी के लिए स्वतन्त्र रूप में दीये है। इस परिधि के अंदर परतंत्र बनकर रहना आपको शोभा नहीं देता क्योंकि स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। हमें स्वतन्त्रता की समग्र क्रांति चाहिए। दया, प्रेम, संगठन वात्सल्य, एकता की क्रांति चाहिए। लड़ाई झगड़े आपसी फूट, कलह, तनाव की क्रांति नहीं। एक पाप अनेकों पापों को जन्म देता है। एक पुण्य हजारों पुण्य बढ़ाता है इसीलिए अच्छे गुणों को अपने जीवन में स्थान देंगे। असत् कार्यों से स्वयं का जीवन को दुःखी अशांत-तनावयुक्त बनता ही है साथ में परिवार, समाज, राष्ट्र भी दुःखी, अशांत, आक्रोश, तनाव युक्त बनते हैं। आचार्यश्री ने सभी कैदियों का सुधारहो इसके लिए वहाँ के शिक्षक को आशीर्वाद देकर कहा कि जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चें के सुधार हेतु उसे अच्छी शिक्षा देकर उसे सुयोग्य बनाती है, उसी प्रकार आप भी इन सभी का जीवन सुखी, सार्थक श्रेष्ठ बनें ऐसी आदर्श शिक्षा से शिक्षित करना।

आचार्यश्री ने अपनी ममतामयी वात्सल्यता, संवेदनशीलता, उदारता, करुणा सभी पर बरषाते हुए स्वरचित साहित्य भेंट किया और अन्तिम शब्दों के साथ साथ-सभी के उच्च, आदर्श, श्रेष्ठ सुख की कामना, मंगल भावना करते हुए बहुत बहुत आशीर्वाद दिया।

आचार्यश्री की ममतामयी, करुणामयी, वात्सल्यमयी मधुर अमृतवाणी को सुनकर अनेकों कैदियों ने उसी क्षण मद्य, मांस, मधु, अण्डा, मछली, बीड़ी, सिगरेट आदि नशीले पदार्थों का त्याग किया।

3. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा एवं संस्कारों की महती आवश्यकता

उदयपुर सर्वसंत सम्मेलन के अंतर्गत परम पूज्य गुरुदेव आचार्य रत्न कनकनंदीजी गुरुदेव ने 'शिक्षा – संस्कार' के परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डालते हुए अपार जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि – आज का दिगम्बर जैन समाज, ईर्ष्या, कलह, कूट, वैमनस्य, कुसंस्कारों की अग्नि में जल रहा है। उस दाह, ताप, संताप को दूर करने के लिए शीतल संस्कारों व सुशिक्षा से सुसंस्कारित युवाओं की महती, अनिवार्य आवश्यकता है। राधाकृष्णन् ने एक जगह बहुत ही ठीक लिखा है कि "आज के मानव ने आकाश में पक्षी की तरह उड़ना सीख लिया, सागर में मछली की तरह तैरना सीख लिया लेकिन इस पृथ्वीतल पर भाई के कंधे से कंधा मिलाकर चलना नहीं सीखा"। हम संत, पंत, ग्रंथ, धर्म के नाम पर आपस में लड़ते, मरते, झगड़ते रहे और गुलामी के जंजीरों में बँधकर दुःख उठाते रहे।

आज मुझे बहुत ही खुशी हो रही है कि हम सभी साधु श्रावक आपस में प्रेम पूर्वक मिलकर बैठे हैं। इस दुनियाँ में कौन किसका है ? केवल आत्मीयता, संवेदना ही तो व्यक्ति को इस भव में ऊँचा उठाती है एवं परभव में भी श्रेष्ठ, आदर्श, ऊँचा बनाने में सहकारी कारण बनती है। साधु की माँ जिनवाणी होती है, पिता जिनेन्द्र देव, बंधु–गुरुभक्त, लक्ष्य मोक्षमहल है। उस मोक्ष महल के लक्ष्य की पूर्ति माता–पिता, भाई–बन्धु, राष्ट्र की एकता, संगठित शक्ति के बल पर हो सकती है। स्वयं तीर्थंकर भगवान के समवशरण में वैर–विरोधी जीव भी आपस में मित्रता, एकता के साथ परस्पर में बैठते हैं उपदेश सुनते हैं। वहीं भगवान महावीर के अनुयायी आज आपस में धर्म, जाति–पाति, आदि के नाम पर लड़ रहे हैं। 100–100 चूहें खाकर बिल्ली हज करने जा रही है। वर्तमान समय में चारों तरफ से पुकार आ रही है कि ऐसी शिक्षा का प्रचार प्रसार होना चाहिए ताकि यह अंधी, मिथ्या रुढ़िगत परम्परायें दूर हो एवं मानव मानव आपस में प्रेम एकता संगठन के वातावरण में जीवन जीयें। इस आपसी प्रेम, संगठन, एकता के वातावरण को सद्गुरु ही तैयार कर सकते हैं। इस प्रकार गुरुओं के सम्मेलन मिलन होते रहे तो समाज की देश की एकता कायम रह सकती है। हम मिथ्या झूठी, संकीर्ण

मान्यताओं में फँसे हुए हैं। अँधों को हाथी का अलग–अलग भाग हाथ लगता है तो कोई उसे खंभा बताता है, कोई सूप। इस प्रकार सातों ही अलग–अलग रूप में बताते हैं, लेकिन दोनों आँखवाला समग्रता के साथ हाथी तो देखता है तब उसे पूर्ण रूप से हाथी कहता है इसी प्रकार हम आंशिक सत्य में जी रहे है। महान वैज्ञानिक आईन्स्टीन ने कहा था कि हम आंशिक सत्य को जान सकते है पूर्ण को नहीं। जब तक अनेकान्त को नहीं जानते भावात्मक रूप से स्याद्वाद को नहीं जानते तब तक अहिंसक नहीं बन सकते। क्योंकि कहीं न कहीं हिंसा का परिणाम उभरकर आएगा ही। द्रव्यात्मक हिंसा से अधिक भावात्मक हिंसा प्रधान होती है। तंदुल मच्छ जो कि शाकाहारी भी नहीं होता बल्कि कानका मलाहारी होता है वह भी मरकर सातवें नरक जाता है और बड़ा मत्स्य मरकर सातवें नरक जाता है ऐसा क्यों ? क्योंकि तंदुल मत्स्य हर समय खोटे विचार करता रहता है। जो मच्छलियाँ उस बड़े मच्छ के मुँह से निकल जाती है वह उनके खाने की परिणाम करता रहता है। एक मछुआरे को एक किसान से अधिक पाप लगता है भले ही उसके जाल में मछली न आए। इसी प्रकार आजकल जैनी लोग प्रायः स्वयं तो बीड़ी सिगरेट, गुटखा आदि नशीले पदार्थ नहीं खाते लेकिन दूसरों को खिलाते हैं। इससे स्वयं की अपेक्षा दूसरों को खिलाये में अधिक हिंसा होती है। क्योंकि स्वयं खाएंगे तो एक ही जीव को पाप लगेगा जबकि अन्य किसी दस को खिलाएगें तो दस का पाप लगेगा।

आज सभी बड़े–बड़े लोग कहते हैं कि शिक्षा व संस्कारों की महत्ती आवश्यकता है लेकिन बड़े लोगों के बच्चे ना तो कभी मन्दिर आते है और ना ही बड़े लोग शिक्षा के लिए चार पैसे ही खर्च करते है। वे अपने बच्चों को कान्वेन्ट स्कूल में पढ़ाने में ही अपना बड़प्पन समझते हैं। हाथी के दाँत खाने के अलग होते है दिखाने के अलग होते है इसीलिए आज शिक्षा संस्कारों का शोर–गुल अधिक है लेकिन आचरण में रंचमात्र भी नहीं है।

हम सभी महावीर भगवान के अनुयायी है, दिगम्बर संत हमारे गुरु है लेकिन हम उनके बताए मार्ग का कितना आचरण अनुसरण कर पाते हैं ? महावीर की अहिंसा, वाणी तक सीमित रह गई हैं। हम कहते कुछ हैं करते कुछ हैं। बड़े–बड़े शब्दों में आदर्श सुक्तियाँ दिवालों पर लिखवाते हैं और दीपावली आने पर फिर पुतवाते है बस यहीं तक हमारा आचरण और अनुसरण रह गया है। हम

पानी छानकर पीते है लेकिन बेटियों का गर्भपात कराते हैं। लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार करते है, दहेज के लोभ से बहुओं की हत्या करते हैं। व्यापार आदि में डालड़ा में चर्बी मिलाते हैं। देशी घी में डालड़ा मिलाते हैं, दाल चावलों में कंकर-पत्थर मिलाते हैं। ये सब असत् कार्य स्वार्थी लोग अधिक करते हैं। एशिया का सबसे बडा बूचड़खाना हिम्मतराव कोठारी का है। आखिर यह सब क्यों और कैसे होता है ?

इन सबका निष्कर्ष यही निकलता है कि हमने शिक्षा के सही अर्थ को जाना और माना नहीं और उसे क्रिया के रूप में संस्कार के रूप में क्रियान्वित नहीं किया।

आचार्य श्री ने युवा परिषद को धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि आज के समय में इस प्रकार के शिक्षित सुसंस्कारित कर्णधार युवाओं की महत्ती आवश्यकता है और यह कार्य संगठित शक्ति के द्वारा ही क्रियान्वित किया जा सकता है। 'संघे शक्ति कलि युगे' क्योंकि जहाँ पर एकता होती है वहाँ कलियुग में भी संगठित संघ का निर्माण होता है। आज इस त्रिवेणी की धारा का संगम कराने का श्रेय युवाओं को है। इस प्रकार से हम साधु संत भी संगठित होकर समाज को, देश को सत्य, शोध-बोध का सही मार्गदर्शन दे सकें आनेवाली युवा पीढ़ी सत्य का आचरण करके अच्छी शिक्षा से सुसंस्कारवान बनकर स्व-पर का, परिवार का, समाज का, देश का, सम्पूर्ण विश्व का हित कर सके। ऐसी सभी के प्रति मेरी आदर्श मंगलमयी शुभ भावनाएँ/कामनाएं हैं।

४. रक्षासूत्र के दो धागे - वात्सल्य एवं संगठन

(उदयपुर) रक्षाबंधन के अवसर पर आचार्यरत्नश्री कनकनंदीजी गुरुदेव ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि देश-विदेश में अनेकों प्रकार के पर्व होते हैं। भारत देश धर्म प्रधान देश होने के कारण यहाँ धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय राजनैतिक आदि अनेकों प्रकार के पर्व मनाये जाते हैं। आज हम दो पर्व एक साथ मना रहे हैं। यह पर्व राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक पर्व है। वैसे आज का पर्व वस्तुतः गुरु का पर्व है न कि भाई का। लेकिन आज धर्म, कर्म रीति -रिवाज,पर्व-परम्परायें, शिक्षा, कानून आदि सभी में विलोमिकरण हो गया है। इसीलिए विनाश

अपनी चरम सीमा पर बढ़ रहा है। हम व्यक्तिवाद को अधिक महत्व देते है, न कि साम्यवाद, समाजवाद को। यही हमारी संकीर्णता कूपमण्डूकता की निशानी है जो कि हर दृष्टि से हर क्षेत्र में हानिकारक है। हम सभी जब तक सामूहिक रूप से संगठित नहीं होंगे तब तक विकास नहीं हो सकता। संगठन में अपार बल है।

पर्व विशेषतः सामुहिक कल्याण हेतु होता है, न कि केवल व्यक्तिगत कल्याण हेतु। पर्व का हमें उद्देश्य, महत्व, परिभाषा का ज्ञान होना चाहिए। पर्व क्या ? पोर, गांठ। जिस प्रकार बाँस या गन्ने में गाँठ होती है : वह गाँठ दो भागों को जोड़ती है। इसीप्रकार ऋषि, मुनि, साधु, संतों ने जो आविष्कार किया उससे उन्होंने सभी को जोड़ा। जैसे धर्म में राजनीति तो राजनीति में धर्म, धर्म में कानून, कानून में धर्म, धर्म में विज्ञान, विज्ञान में धर्म, इतिहास में धर्म, कानून में धर्म, धर्म में इतिहास। इस प्रकार सभी विषय एक दूसरे के पूरक होने चाहिए। लेकिन सभी पर्व-परम्परायें सभी रीति -रिवाज आगे चलकर विकृत परम्पराओं में परिणत हो गयी। जैसे दीपावली को दिवालिया बना दिया, ज्ञान-लक्ष्मी की पूजा के बजाय भौतिक लक्ष्मी की पूजा करते हैं। ज्ञानरूपी दीपक जलाकर तो प्रकाश नहीं फैलाते, बल्कि जुआ खेलकर अंधकार फैलाते हैं। इस प्रकार पहले-पहले ये पर्व-परम्परायें सही रूप में विकसित होते हैं लेकिन धीरे-धीरे विकृत रूप ले लेते हैं। जैसे गंगा जहाँ से निकलती है वहाँ अत्यन्त पवित्र पावन होती है लेकिन जैसे-जैसे आगे बढ़ती जाती है अपावन हो जाती है। ऐसे ही पर्व पवित्रता से ही बनता है लेकिन आगे जाकर रूढ़ियों में विकृत हो जाते हैं। रक्षाबंधन किसकी रक्षा किसका बंधन ? धर्म, श्रमण, साधु साधकों की रक्षा करना, कर्तव्य रूपी सूत्रों के द्वारा।

अनेक प्रकार के रेशों से मिलकर जिसप्रकार धागा बनता है उसी प्रकार हम भी संगठन में बँधकर संगठित होवे। बंधन कैसा ? आत्मा के ऊपर, अहिंसा, प्रेम का बंधन। नदी के दो तटों से ही नदी की सुरक्षा होती है वरना बाड़, विप्लव होकर पानी इधर-उधर हो जायेगा। इसी प्रकार हम भी प्रेम, सौहार्द, संगठन, एकता के सूत्रों में नहीं बंधेगे तब तक सुरक्षित नहीं रह सकते।

परम्परा, गुण, नियम को धारण करने के लिए सूत्रों की आवश्यकता होती है। आज रक्षा बंधन का दिन है। रक्षा करने का दिन है। भारतवासी हजारों वर्षों से यह पर्व मनाते आ रहे हैं फिर भी भारतवासी असुरक्षित हैं क्योंकि इस पर्व के महत्त्व को भूल गये हैं, रक्षा के महत्व को भूल गये हैं। इस बात को देखकर

वह पुराना इतिहास याद आता है जब हिन्दू रानी कर्मवती ने मुस्लिम बादशाह हुमायूँ को रक्षासूत्र भेजकर भाई माना। रक्षासूत्र देखकर मुस्लिम बादशाह गद गद हो गया कि एक हिन्दू महिला मुझे भाई माने इससे बढ़कर और सौभाग्य मेरे लिए क्या हो सकता है? वह उस समय एक युद्ध में संलग्न था। विजयश्री उसके सम्मुख थी लेकिन रक्षासूत्र की रक्षा हेतु वह राजस्थान चला आया और बहिन कर्मवती के सतीत्व की रक्षा की। यही है उच्च मानवता,रक्षा का संकल्प। आज का यह पर्व बहिन ने भाई की कलाई पर दो-चार रूपयें की राखी लाकर बाँध दी; उसका महत्त्व नहीं है बल्कि आज का यह पर्व ऊँचे संकल्पों, आदर्शों को हृदय में बसाने का पर्व है।

इस पवित्र पर्व रक्षाबंधन में अहिंसा की भावना, दया, क्षमा, करुणा,वात्सल्यता, संवेदनशीलता की भावनायें निहित है। राखी के धागें मानवता को जगाने के लिए है। जब हमारे सामने किसी की रक्षा का प्रश्न आता है तो उस समय जाति, कुल आदि का विचार त्याग कर उसकी तन-मन-धन से एकाग्रता पूर्वक रक्षा करनी चाहिए। वैदिक साहित्य एवं जैन साहित्य में इस पर्व की कथा का इतिहास लगभग समान ही है। इस पर्व की परम्परा कब से, कहाँ से, किस प्रकार प्रारम्भ हुई? जैन शास्त्रानुसार इसको बताऊंगा। जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आर्य खण्ड है। उस आर्य खण्ड में हस्तिनापुर नामक नगर है। उस नगर में नीति निपुण, प्रजावत्सल, मेंघरथ नामक धार्मिक राजा था। उसके पद्मावती नाम की रानी सभी गुणों से सुसम्पन्न थी। उसके विष्णुकुमार व पद्मराज नामक दो पुत्र थे। वे दोनों ही हर प्रकार के गुणों से सम्पन्न एवं हर विद्या में प्रवीण-पारंगत थे। कुछ दिनों बाद विष्णुकुमार को इस असार संसार से वैराग्य हो गया और उन्होंने श्रुतसागर मुनि से दिगम्बरी दीक्षा को ग्रहण करके कठिन तपस्या करके विक्रिया ऋद्धि को प्राप्त कर लिया।

इधर उज्जैनी का राजा श्रीवर्मा अपनी प्रजा सहित राजसुखों को भोग रहा था। उसके बलि, बृहस्पति, प्रहलाद, नमुचि ऐसे चार मंत्री थे। वे चारों ही मिथ्यादृष्टी थे। उन चारों के बीच राजा चंदन के समान था क्योंकि राजा के सामने उन चारों मंत्रियों की कुछ नहीं चलती थी। एक दिन अकम्पनाचार्य नामक मुनि अपने 700 मुनि संघ को लेकर नगर के बाहर उद्यान में आ गये। तब वे निमित्तज्ञान से इस नगर की अवस्था हानिकारक है, ऐसा समझकर उन्होंने अपने संघ को कहा-

तुम इस नगर में किसी के साथ वाद-विवाद मत करना। क्योंकि संघ के ऊपर बड़ी आपत्ति आने की संभावना है। इस प्रकार गुरु की आज्ञा सुनकर सभी शिष्य मौन धारण करके बैठ गये परंतु उसमें श्रुतसागर नामक एक मुनि आहार हेतु नगर में गए थे। गुरु ने नगर में जाने के लिए मना कर दिया था पर उनको मालूम नहीं था। मुनि संघ का आने का समाचार नगर में मालूम होते ही राजा अपने मंत्री तथा परिवार के साथ मुनि के दर्शन करने गया। राजा ने अत्यन्त भक्ति भाव से उन मुनिराजों की तीन प्रदक्षिणा देकर नमस्कार भक्ति आदि किया। परंतु सभी मुनि गुरु आज्ञा के अनुसार मौन लेकर अपने ध्यान में मग्न रहे। किसी ने किसी को आशीर्वाद नहीं दिया। राजा ने समझा ये सभी मुनिश्री ध्यानमें मग्न है, ऐसा समझकर नगर में लौट गया किंतु रास्ते में मंत्री आदि कहने लगे, ये मुनि मुर्ख हैं अपनी मूर्खता छिपाने हेतु मौन का बहाना लेकर बैठे हैं। इस प्रकार उन्होंने मुनियों की एवं धर्म की निंदा की। इधर श्रुतसागर मुनिश्री नगर से आहार करके वापिस आ रहे थे तो बलि आदि मंत्रियों की नजर उन पर पड़ी। उनको देखकर मंत्री राजा से कहने लगा कि देखो, ढोंगी साधु बैल के समान आहार लेकर आ रहा है। उनके वचन सुनकर मुनिश्री बोले – हे मंत्री ! तुम अपने ज्ञान की व्यर्थ ही प्रशंसा मत करो, तुम हमारे साथ शास्त्रार्थ करो। तब तुम को मालूम हो जायेगा बैल कौन है? पश्चात् मुनिश्री और मंत्रियों का वाद-विवाद हुआ। मुनिश्री ने वाद-विवाद में उन मंत्रियों को जीत लिया और स्याद्वाद अनेकांत सिद्धान्तों की महिमा प्रगट की। उनके सभी लोग विवश और लज्जित होकर लौट गये लेकिन मंत्रियों के मन में और अधिक द्वेष ईर्ष्या की अग्नि भड़क उठी।?

इधर श्रुतसागर मुनिश्री ने मार्ग में जो घटना घटी संपूर्ण जानकारी गुरुदेव को दी। तब गुरुदेव ने कहा- यह तो बहुत बड़ा अनर्थ हो गया। मुनिश्री पश्चात्ताप करने लगे और गुरुदेव से कहा- गुरुदेव! इस अनर्थ के निवारणार्थ कोई उपाय बताओ, मुझे प्रायश्चित्त दो। गुरुदेव ने कहा- जिस स्थान पर शास्त्रार्थ हुआ था वहीं जाकर तुम ध्यानमग्न खड़े रहे, तो शायद पूरे संघ की आपत्ति टल जावे। गुरुदेव की आज्ञा पाते ही मुनिश्री उसी स्थान पर ध्यान मग्न कायोत्सर्ग अवस्था में खड़े हो जाते हैं।

इधर चारों ही मंत्रियों ने अपना बदला लेने हेतु मुनिश्री के प्राणघात करने का विचार किया। इतने में उसी स्थान पर वे ही मुनि ध्यानस्थ खड़े मिल गये। उन

चारों ने मुनिश्री का सिर काटने हेतु अपनी तलवारें निकाल ली और चारों ने मिलकर एकसाथ तलवार का वार किया लेकिन नगर देवता ने उनके हाथों को ऐसे का ऐसे ही कील दिया। उनको अपने घोर पाप का फल तुरंत ही मिल गया। प्रातः काल यह समाचार शीघ्र ही सम्पूर्ण नगर में फैल गया। सारी राजा – प्रजा मंत्रियों की दुष्टता प्रत्यक्ष में देखकर उनको धिक्कारने लगी कि ये तो महान् पापी, दुष्ट हैं जो कि निरपराधी मुनि को मारने हेतु इन्होंने इतना घोर पाप कमाया है।

इतनी दुष्टता, क्रूरता देखकर राजा ने मंत्रियों को अपने राज्य से निकाल दिया क्योंकि पापी दुष्ट जीवों को कठोर दण्ड मिलना ही चाहिए। उस समय जैन धर्म का अपूर्व, महिमामयी–चमत्कार देखकर सभी लोग आनंदित होकर जय–जयकार करने लगे। इधर हस्तिनापुर के राजा पद्मराज के ऊपर कुम्भपुर के राजा शिवध्वज ने खूब उपद्रव किया इससे राजा बहुत ही दुःखी अशांत रहता था। इस उपद्रव की शांति किस प्रकार होगी इस बात से वह हमेशा चिन्तित एवं दुःखी बना रहता था। इधर उज्जैन से निकले चारो मंत्री हस्तिनापुर आ गए। वे राजा को कष्टप्रद जानकर उसके कष्ट निवाणार्थ पद्मराज से मिलने और अपने बल से शिवध्वज राजा को परास्त करके राजा पद्मराज के सामने बंदी बनाकर उपस्थित कर दिया। राजा मंत्रियों की वीरता, चतुरता से बहुत ही प्रभावित एवं खुश हुआ और मंत्रियों से कहा– तुम को जो चाहिए वह माँग लो। मंत्रियों ने कहा - जब हमें जरूरत होगी तब मांग लेगे। राजा – मंत्री सभी सुखपूर्वक राज्यभोगों में निमग्न हो गये।

बहुत दिनों बाद वही अकम्पनाचार्य अपने 700 मुनियों सहित विहार करते–करते हस्तिनापुर के उद्यान में आ गये। समाचार सुनकर सभी लोग दर्शन करने गये। उस समय पिछला वैर याद करके वे मंत्री बदला लेने का विचार करने लगे। तब उन चारों ने मंत्रणा करके विचार किया कि राजा के पास अपनी धरोहर रखी है। आज हम राजा के वचनानुसार सात दिन का राज्य मांग लेते हैं। उन्होंने राजा के वचनानुसार सात दिन का राज्य मांग लेते हैं। उन्होंने राजा को दिये हुए वर की याग दिलाते हुए कहा राजन! आज हम अपने वर की याचना करते हुए आपसे सात दिन का राज्य चाहते हैं। अंत में लाचार होकर विवशतावश अपने वचनानुसार राजा ने चारों मंत्रियों को सात दिन का राज्य दे दिया और स्वयं दीन- अनाथ बनकर राज्य भवन में चुपचाप बैठ गया। उन दुष्ट मंत्रियों ने राज्य प्राप्त कर उन सभी मुनियों को जीवित जलाने की योजना बनाई। उन्होंने मुनियों

के चारों तरफ बाडा लगवाकर गीली लकड़ियों में आग लगा दी। गीली लकड़ियाँ होने के कारण खूब जोरदार धुंआ उठने लगा और उस अग्नि में चर्बी, हड्डी आदि घिनोने पदार्थ भी डालें। इससे मुनियों के नेत्र, गले सभी रूँध गये। उन्हें असह्य वेदना होने लगी लेकिन सभी मुनि अपने ऊपर उपसर्ग आया मानकर आत्मध्यान में लीन हो गये। मुनियों के ऊपर ऐसा प्राणघातक उपसर्ग होता देख राजा पद्मरथ को बहुत ही दुःख हुआ लेकिन वचनबद्ध होने के कारण उपसर्ग दूर करने में असमर्थ रहा। समस्त जनता में हाहांकार मच गया, किंतु राजसत्ता प्राप्त मंत्रियों को कोई कुछ नहीं बोल सकता था।

विष्णु कुमार मुनिश्री के गुरु मिथिला नगरी में ठहरे हुये थे। उन्होंने रात्रि में श्रवण नक्षत्र को कांपते हुए देखा तब दिव्यज्ञान से हस्तिनापुर में अकम्पनाचार्यादि 700 मुनियोंपर घोर उपसर्ग होता जानकर अकस्मात् उनके मुख से दुःख चिंता सूचक 'हाय-हाय' शब्द निकल पड़ा। रात्रि में अपने गुरु के मुख से हाय-2 शब्द सुनकर वहाँ निकट बैठे हुए क्षुल्लक जी ने इसका कारण पूछा, तब उन्होंने कहा कि हस्तिनापुर के राजा पद्मराज के पापी दुष्ट मंत्रियों नरमेध यज्ञ रचाकर अकम्पनाचार्यादि 700 मुनियों को जीवित जला देने की योजना बनाई है। तत्काल ही यह घोर उपसर्ग शांत न किया गया तो मुनियों का जीवित बचना मुश्किल है। क्षुल्लक जी ने पूछा – गुरुदेव ! इसका उपाय क्या है ?

गुरुदेव ने कहा – धरणीतिलक पर्वत के ऊपर विष्णुकुमार मुनि तपस्या कर रहे हैं। उनको विक्रिया ऋद्धि सिद्ध हो गयी है, अतः विष्णुकुमार ही उस ऋद्धि के द्वारा उपसर्ग दूर कर सकते हैं। गुरु की बात सुनकर, गुरु आज्ञा लेकर क्षुल्लकजी तुरंत ही आकाशगामिनी विद्या के द्वारा शीघ्र ही धरणी तिलक पर्वत पर विष्णुकुमार मुनिश्री को समस्त बात कही।

क्षुल्लक जी की बात सुनकर विष्णुकुमार मुनिश्री के हृदय में करुणा, वात्सल्य भाव उमड़ पड़ा। वे उसी समय हस्तिनापुर आये और अपने गृहस्थावस्था के भाई पद्मराज को खूब डाँटा– फटकारा। फिर बलि आदि मंत्रियों का गर्व दूर करने के लिए अपना बहुत छोटा ब्राह्मण का रूप बनाया और वेदों के मंत्रों को स्पष्ट बोलते हुए बलि आदि के पास पहुँचे, जहाँ ये लोग यज्ञ कर रहे थे।

लघुकायधारी उस ब्राह्मण के मुख से वेद मंत्रों का स्पष्ट उच्चारण सुनकर बलि आदि मंत्री बहुत ही प्रभावित प्रसन्न हुए और बोले हे ब्राह्मण देवता, आपको

जो कुछ हमसे मांगना है मांग लो। ब्राह्मण देवने तीन डग भूमि माँगी। मंत्रियों ने कहा – यह तो तुमने बहुत कम मांगा है। नहीं मुझे तीन डग भूमि ही चाहिए। मैं परिग्रहधारी ब्राह्मण नहीं हूँ। बलि ने कहा– अच्छा तीन डग नापकर ले लो। तब विष्णुकुमारने विक्रिया ऋद्धि के बल पर अपना बहुत बडा शरीर कर लिया तदनुसार एक पग सुमेरु पर्वत पर, दूसरा मानुषोत्तर पर्वत पर फिर कहा – तीसरे पग के लिए भूमि दो। बलि विराट् शरीर को देखकर दंग रह गया उनके चरणों में गिरकर क्षमा मांगने लगा।

विष्णुकुमारने अपने असलीरूप में आकर अकम्पनाचार्यादि 700 मुनियों का उपसर्ग दूर किया एवं समस्त श्रावकों ने धुएं से रुँधे हुए मुनियों के गले को लाभकारी कोमल सेवइ और खीर का भोजन तैयार करके बड़ी भक्ति से आहार कराया। जिनके घर साधु नहीं आये उन्होंने दरवाजे पर मुनि के चित्र स्थापना करके द्वार प्रेक्षण की आहारविधि पूरी की।

विष्णुकुमार मुनिश्रीने पुनः प्रायश्चित लेकर फिर तपस्या की। यह पवित्र दिन श्रावक सुदी पूर्णिमा का था। उसी दिन से यह पर्व रक्षाबंधन के नाम चला आ रहा है। हमको यह पर्व केवल परम्परानुसार अनुकरण के रूप में ही नहीं मनाना चाहिए बल्कि विष्णुकुमार मुनि के समान साधर्मी जनता की विपत्ति हटाने के लिए सर्वस्व समर्पण करने के लिए तैयार रहना चाहिए तथा अकम्पनाचार्यदि गुरुओं की तरह दृढ़ता पूर्वक धर्म पालन करना चाहिए। इस पर्व की सार्थकता, श्रेष्ठता को समझे इसे विकृत ना करें। धर्म, ग्रंथ, संत, पंथ किसी के ऊपर संकट आवे तो सब कुछ भूलकर उसके संकट का निवारण करना। क्योंकि जो वीर साहसी होते हैं वे कायर बनकर किसी के सामने सिर नीचा नहीं करते बल्कि अपने प्राणों का उत्सर्ग करकेभी धर्म, गुरु, साधर्मी जनों की रक्षा करते हैं। यही रक्षाबंधन पर्व का महत्व, उद्देश्य है।

आज रक्षाबंधन के अवसर पर आप सभी को संकल्प करना है कि धर्म, गुरु, राष्ट्र की रक्षा एवं सेवा संगठित होकर करेंगे। सभी के साथ दया, प्रेम, करुणा, क्षमा, वात्सल्य का भाव रखेंगे। अपने हृदय को विशाल बनाकर सभी के साथ भाईचारे का व्यवहार करेंगे।

(अन्त में सभी ने मुनिसंघ की पिच्छी में रक्षासूत्र बाँन्धे और आ. कनकनंदीने सब को उनकी इच्छानुसार एक एक नियम दिये।)

5. मनुष्य का उत्थान पतन मनःस्थिति पर निर्भर है

धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यरत्न कनकनंदीजी गुरुदेव ने कहा कि मनुष्य जैसा सोचता–विचारता है वैसी ही प्रतिक्रिया वातावरण में होती है। भावों का प्रभाव व्यक्ति, पशु–पक्षी प्रकृति, सभ्यता संस्कृति, राष्ट्र सभी के ऊपर पड़ता है। एक राजा था वह घूमते–घूमते एक जंगल में पहुंच गया। वहाँ उसे बहुत तेज प्यास लगी तो पानी को खोजने के बाद एक कुटिया दीखी। वह राजा पानी पीने के लिए माँगता है तो वहाँ का व्यक्ति बगीचे से सुंदर फल तोड़कर राजा को रस पिलाता है। उस मधुर–मीठे रस को पीकर राजा के मन में विचार आता है कि इतने मधुर मीठे फलों पर अगर टैक्स लगाया जाये तो राज्य की कितनी आमदनी होगी। वह उस व्यक्ति से पूछता है– क्या इन फलों के ऊपर कोई टैक्स लगता है ? वह व्यक्ति कहता है इन फलों पर कोई टैक्स नहीं लगता है क्योंकि हमारा राजा बहुत ही ईमानदार–सरल सहज–परोपकारी – करुणादानी है इसीलिए कोई टैक्स आदि नहीं लगता। वह राजा वहाँ से चला जाता है और कुछ दिन बाद भेष बदलकर फिर रस पीने के लिए माँगता है। इस बार उस व्यक्ति को रस लाने में देर लगी। वह भी कम रस लेकर आया। उस राजा ने रस पीया लेकिन पूर्ववत् रस का स्वाद नहीं था। वह राजा पूछता है कि एक बार पहले मैंने रस पीया था तब तो आप बहुत शीघ्र ही लोटा भरके मधुर–मीठा रस लाये थे। लेकिन इसबार देर से भी लाये और कम भी है और इतना स्वादिष्ट–मधुर–मीठा रस नहीं है। इसका कारण क्या है ? वह व्यक्ति बोला– यहाँ के राजा के भावों में कलुषता, कुटिलता, परिवर्तन आ गया है इसीलिए यह हुआ। पहले एक – दो फल से ही लोटा भर जाता था वह भी मीठा–मधुर रस निकलता था। अब मैंने लोटा भर रस के लिए कितने फल तोडे लेकिन इतना ही रस निकला। इसीलिए मुझे देरी हुई रस भी कम निकला। राजा समझ जाता है कि मेरे विचारों में खोटापन आने से इन पेड़ पौधों पर भी इतना गहरा प्रभाव पड़ता है। वह तुरंत ही टैक्स आदि का विचार त्याग देता है और फिर देखता है तो पूर्ववत् उसी प्रकार सभी फलों में मीठा मधुर अधिक रस आ जाता हैं। इस प्रकार व्यक्ति के विचारों में

अपार शक्ति होती है। वह अच्छे कार्यों में लग जाये तो अच्छे और बुरे कार्यों में लग जाये तो बुरे परिणाम प्राप्त होते हैं। विचारों में एक प्रकार की चेतना शक्ति होती है। इस प्रकार विचार अपने आप में एक सजीव और सूक्ष्म तत्व है। इन विचारों का जब केन्द्रीकरण हो जाता है एक अद्भुत प्रचण्ड शक्ति का उद्भव होता है।

विचारों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। अपने सुख-दुःख, हानि-लाभ, उन्नति-अवनति, सफलता-असफलता सभी कुछ हमारे अपने विचारों पर निर्भर करते हैं। जैसे विचार होते हैं वैसा ही हमारा जीवन बनता है। मनुष्य जिस प्रकार के विचारों का प्रश्रय देता है उसके वैसे ही आदर्श, हावभाव, रहन सहन ही नहीं शरीर में तेज, मुद्रा आदि भी वैसे ही बनते हैं। इसीलिए ऋषि, मुनियों की अहिंसा, न्याय, प्रेम, वात्सल्यता, दया, करुणा, क्षमा, सहिष्णुता के विचारों से प्रभावित होकर वहाँ का सारा वातावरण स्वच्छ सुगंधित होने के कारण हिंसक पशु भी अपनी हिंसा छोड़कर आपस में प्रेम पूर्व एक साथ विचरण करते थे।

भावनाओं की गति एवं तरंगें तीव्र गति को धारण करती है। विचारों की शक्ति विद्युत चुम्बकीय क्षमता की तरह होती है। परामनोविज्ञान के अनुसंधानकर्त्ताओं ने ऐसे-ऐसे आविष्कार किये हैं कि संवेदनाओं से लेकर अतीन्द्रिय क्षमताओं तक की समस्त जानकारियाँ हासिल कर ली है। रेडियों प्रसारण जिस स्टेशन से होता है वहाँ एक बड़ी क्षमता वाला विद्युत जेनरेटर जुड़ा रहता है। यह विद्युत शक्ति चुम्बकीय क्षेत्र से गुंजारी जाती है जिससे उसकी क्षमता कई गुनी अधिक तरंगित हो जाती है। वे तरंगे 3 लाख कि.मी. प्रति सैकण्ड से भी बढ़कर होती है। परन्तु मनोविज्ञान के अनुसार मन की गति प्रति सैकण्ड 10 नील मील होती है। इसी प्रकार हम जैसे विचार करते हैं वे भाव रुप में परिणत होकर फैल जाते हैं। तीर्थंकर के आसपास दुर्भिक्ष, महामारी, अकाल, युद्ध आदि दुष्प्रवृत्तियाँ नहीं पनपती क्योंकि उनका ओरा (आभामण्डल) का ही यह प्रभाव होता है। हम लोग मंदिर की, भगवान की, संत पुरुषों की परिक्रमा इसीलिए तो लगाते हैं कि उनके चारों तरफ के जो पुण्य परमाणु हैं वह पुण्य परमाणु हमारे अंदर भी प्रविष्ट हो जाये। मनुष्य का उत्थान-पतन भावों पर ही निर्भर है। जैसा बीज होगा वैसा ही पौधा उगेगा। जैसे विचार होंगे वैसे ही कर्म बनेंगे। जैसे कर्म करेंगे वैसी ही परिस्थितियाँ बनेंगी। भली-बुरी परिस्थितियाँ अनायास ही नहीं बनती। उनका

कर्त्तव्यों से गहरा संबंध हैं। इन कर्त्तव्यों से ही अच्छे-बुरे, भूत-वर्तमान भविष्य बनते हैं। हमें अत्यन्त बारीकी के साथ अपनी विचार श्रृंखला पर ध्यान देना चाहिए और देखना चाहिए कि उनका स्तर क्या है, उनका प्रवाह किस दिशा में बह रहा है। यदि वासना, तृष्णा, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, जैसी आकांक्षाओं की प्रधानता है तो समझना चाहिए हम सत्-कर्मों से दूर है एवं असत् मार्ग पर चल रहे हैं। अपने दोष दुर्गुण समझने और उन्हें सुधारने की आकांक्षा यदि जागृत होती है तो समझना चाहिए हमनें अपने विचारों को सहीरुप में पहिचान लिया है एवं हम सत् मार्ग पर अग्रसित हो रहे हैं।

कुविचार, खोटे भाव ही मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं। ये ही मानव को पतन के गढ्ढे में गिराने में सहकारी मित्र की तरह भूमिका अदा करते हैं। तथा प्रगति पथ पर अग्रसित होने के लिए अवरोध उत्पन्न करते हैं। इसीलिए दूरदर्शी दिव्य पुण्य पुरुष संत, ऋषि, महात्मा अपनी परिस्थिति को सुधारने के पूर्व मानसिक स्थिति को निष्पक्ष भाव से देखते हैं कि कहीं अनैतिक, अवांछनीय, गलत, मिथ्याविचारों ने मनोभूमि में प्रवेश तो नहीं कर लिया है ? अगर ऐसी दुष्प्रवृत्तियों को मनोभूमि में रंचमात्र भी प्रवेश मिलता देखते हैं तो तुरंत ही उसे निकालने की कोशिश करते हैं। क्योंकि आत्मशोधन ही उनका सबसे बड़ा कार्य, पुरुषार्थ, लक्ष्य होता है। इस आत्म शोधन के कार्य को ज्ञानी, विवेकी जन बड़े ही यत्न/प्रयत्नपूर्वक करते हैं। बाहरी शत्रुओं से निपटना सरल है। क्योंकि वें दिखाई पड़ते हैं किंतु आन्तरिक शत्रु समझ में नहीं आते, वे दीखते नहीं इसीलिए उनकी ओर ध्यान नहीं जाता और निपटने की आवश्यकता भी महसूस नहीं होती। इसी उपेक्षा दृष्टि के कारण आन्तरिक शत्रु अपनी जड़े गहरी जमाते रहते हैं। और मनुष्य के चिंतनतंत्र पर मजबूती के साथ कब्जा करके मानव को निचली परिस्थिति पर खड़ा कर देते हैं। जिस प्रकार हम लोग दूसरों की समीक्षा करते हैं, आलोचना, निंदा किया करते हैं उसी प्रकार क्या कभी अपने गुण, धर्म, स्वभाव, विचारों की परख की ? अगर प्रत्येक प्राणी स्व-स्वरूप, स्वआदतों के बारे में चिंतन/मनन करें तो आज परिवार, समाज, विश्व में फैल रहा अन्याय, अत्याचार पापाचार, भ्रष्टाचार, असत्य, छलकपट, बेईमानी, कलह, फूट, वैमनस्य, असहिष्णुता, स्वार्थपरता, कटुभाषण, भय अशिष्टता, कायरता, निराशा, असंतोष, दुःख, पीड़ा आदि दुष्प्रवृत्तियाँ स्वयमेव पलायन कर सकती हैं।

जो विचार अभ्यास में आते हैं और क्रियान्वित होते हैं उन्हीं की जड़ जमती हैं। बुरे विचारों पर तुरंत नियन्त्रण लगाना चाहिए एवं श्रेष्ठ विचारों को बढ़ाने की कोशिश की जानी चाहिए। क्योंकि विचारों से केवल हमारा जीवन चक्र ही प्रभावित नहीं होता बल्कि प्रकृति, सभ्यता संस्कृति, परिवार, समाज, विश्व यहाँ तक कि सम्पूर्ण भूमण्डल के कण-कण पर विचारों का प्रभाव पड़ता है। जब माँ बच्चे को खोटे-दूषित भावों से दूध पिलाती है तो वह दूध भी विष बन जाता है। जिस माँ के अंदर प्रेम-वात्सल्य-संवेदनशीलता अधिक होती है तो उनके स्तन में दूध अधिक होता है। जिन पेड़ पौधों को अच्छा-अच्छा संगीत सुनाया जाता है वे पेड़-पौधे अधिक सघन, मीठे मधुर फल पत्र पुष्पों से युक्त होते हैं। अगर किसी वृक्ष के पास गंदी खोटी भावनायें करें तो वह वृक्ष विषाक्त तत्व निकालता है। वृक्ष भी विचारों से प्रभावित होते हैं तो मनुष्य एवं पशु-पक्षियों परभी विचारों का प्रभाव पड़ना स्वभाविक है। गाय-भैंस आदि जानवरों को अगर हम प्रेमपूर्वक चारा-पानी देते हैं तो अधिक दूध देते हैं एवं दूध में भी अच्छा स्वाद होता है।

आज प्रकृति, सभ्यता-संस्कृति, परिवार, समाज, विश्व, धर्मनीति, राजनीति, अर्थनीति में हमारे दूषित, खोटे विचारों के कारण बदलाव आ रहा है। मनः स्थिति बदल जाने पर परिस्थितियों में बदलाव आना सुनिश्चित है। जबतक व्यक्ति के भाव परिष्कृत-परिमार्जित, शुद्ध-सात्विक नहीं होगें तब तक धर्म कानून, प्रशासन कुछ नहीं कर पायेगें। सभी को सुधारने की ताकत भावों में ही हैं। विश्व व्यवस्था की वर्तमान स्थिति पर दृष्टिपात करने से मालूम होता है कि बढ़ता प्रदूषण, अपराधों में अभिवृद्धि, लूट, दरिद्रता, अशिक्षा, जनसमुदाय में दुर्बलता आदि कुप्रवृत्तियों एवं संकट समस्याओं के बीच विश्व का चक्र घूम रहा है। समस्यायें, उलझने, परेशानियाँ अपने-अपने ढंग से हर किसी को दुःखी, परेशान कर रही है। चिंतायें, आशंकायें, भय, घृणा जन-जन के मन को आतंकित किये हुए हैं। आखिर यह सब ऐसा क्यों हो रहा है ? जबकि प्रगति युग के नाम से प्रख्यात वैज्ञानिक युग ने अनेकानेक सुख-सुविधाओं की उपलब्धियाँ हासिल कर ली है। फिर भी आज का मानव आकुल-व्याकुल-अस्त-व्यस्त जीवन जी रहा है। इसका एकमात्र उत्तर/समाधान यही है कि उपलब्धियों के दुरुपयोग में दुर्बुद्धि का बोलबाला अधिक है। नैतिक मूल्यों की अवज्ञा, अनादर उपेक्षायें होने लगी है। शीघ्रातिशीघ्र अधिक धनवान् बनने की दौड़ एक दूसरें में लगी हुई है। इन सब परिणामों की स्थिति बाद में

क्या बनेगी। इस प्रक्रिया को शांति से, फुरसत से सोचने-समझने की शक्ति किसी के पास नहीं है। इसीलिए अगणित उपलब्धियाँ, सुख, साधन होने के बावजूद भी मानव परेशान-दुःखी है।

जितने भी मनुष्यों ने महानता, सुख सम्पन्नता हासिल की अपने मन में उच्च विचारों को आदर्शों को स्थान दिया। रामराज्य का क्या अर्थ ? यही कि राम का व्यक्तित्व अच्छा था, प्रजा के सुख-दुःख को वे अपना ही सुख-दुःख मानते थे। राजा प्रजा को प्रजा की दृष्टि से नहीं बल्कि राजा की दृष्टि में ही देखता था इसीलिए राजा-प्रजा दोनों ही सुख-सम्पन्न आनन्दित थे। राज्य में कही भी चोरी, डकैती, महामारी, दुर्भिक्ष, अकाल जैसी परिस्थितियाँ नहीं थी। जबकि रावण की दुष्टता से प्रजा भी दुष्ट बन गयी एवं सोने की लंका भी राख में बदल गयी। इसीलिए सुख एवं शांति की इच्छा है तो श्रेष्ठ, आदर्श, सत्-विचारों की पूँजी अपने पास एकत्रित करनी चाहिए। सुख शांति न तो संसार की किसी वस्तु में है न ही धन दौलत में। अनंत, अविनाशी सुख तो हमें श्रेष्ठ, आदर्श विचारों से ही प्राप्त हो सकता है। विचाररूपी साँचे में ढलकर ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वतोमुखी विकास होता है। व्यक्ति का कैसा व्यक्तित्व है यह उसके विचारों से ही पता लग जाता है। मनुष्य के अंदर अच्छे-बुरे दोनों तरह के विचार होते हैं। जब मनुष्य निराशामय एवं अंधकारमय विचारों के जाल में फँस जाता है तो उसकी सुख शांति विलीन हो जाती हैं। उसे यह दुनिया नारकीय दिखायी देने लगती है। इन विचारों से छुटकारा पाने का साधन अन्यत्र कहीं नहीं केवल मनुष्य के पास ही है। हम ही ब्रह्मा - विष्णु, महेश हैं। यानि अपने भावों को जन्मदेने वाले, उन भावों से बने कर्मों के फल को भोगने वाले एवं तप-त्याग-ध्यान के द्वारा उन कर्मों के संहारक/नष्ट करने वाले हम ही हैं।

हर धर्म, संप्रदाय, जाति में भावों को प्रधानता दी है। भले ही शब्दों में अंतर हो लेकिन अर्थ, उद्देश्य, महत्व सभी का निष्कर्ष के रूप में एक ही निकलता है। जैसे- आनुवांशिक गुण, जीन्स, D.N.A., R.N.A. कर्म, भाव, विचार परिणाम आदि सभी प्रायः एकार्थवाची नाम है।

मनुष्य प्रत्येक कार्य विचारों से प्रेरित होकर करता है। विचार मनुष्य को इंगित करते हैं कि तुम्हें किस दिशा में चलना चाहिए। विचारों का उपयोग निस्संदेह अतुलनीय है। विचारों को जिस दिशा में लगा दिया जाता है उसी दिशा में उन्नति-

अवनति होने लगती है। हम जैसे विचार करके सोते हैं अक्सर सपने भी उसी रूप आते हैं। 'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि'। कंस को कृष्ण यम के रूप में ही, शत्रु के रूप में ही दिखाई देता था। जबकि सुदामा को मित्र, ग्वाले-गोपियों को सखा, यशोदा को प्यारा बेटा के रूप में कृष्ण के सुंदर-सुंदर रूप दिखायी देते थे। दुर्योधन को सभी नगरवासियों में दुर्गुण दोष ही दिखाई दिये जबकि युधिष्ठर को सभी के अंदर अच्छे गुण ही दिखाई दिये। इस प्रकार जैसा हमारा सकारात्मक नकारात्मक दृष्टिकोण, सोचने, विचारने के भाव होते हैं उसी प्रकार हमें गुण-दोष नजर आते हैं।

इस प्रकार भावों का हर दृष्टिकोण से आचार्यश्री ने विशद विश्लेषण करते हुए अन्तिम शब्दों में कहा कि यदि मनुष्य अपनी विचार शक्ति पर सही रूप से नियन्त्रण कर ले तो उसकी शक्ति-प्रगति-समृद्धि हर प्रकार से सुरक्षित है। इसीलिए विचारशील चिन्तकों को यह चाहिए कि वे अपने दायित्वों को पहिचाने और अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए स्व-कल्याण के साथ पर कल्याण की भावना भी करें। जो परकल्याण की भावना को महत्व देता है वही तीर्थंकर बनता है। तीर्थंकर का स्वयं का उद्धार तो होना निश्चित ही है लेकिन उनकी विशुद्ध - पवित्र - उदारमयी भावनाओं के कारण असंख्यात जीवों का उद्धार होता है। अच्छाईयों में भी अपनी शक्ति एवं विशेषता होती है पर वह प्रभावशाली तभी बनती है जब मन वचन कर्म की एकता, समन्वय हो। मनोभूमि को सत्कर्मों तथा सद्भावनाओं की हरी-भरी फसल बनाने के लिए अपने भावों को परिष्कृत-परिमार्जित एवं श्रेष्ठ बनाये ताकि स्वयं के कल्याण के साथ पर कल्याण भी हो सके। दुनियाँ की प्रत्येक वस्तु की हमनें जानकारी हासिल कर ली लेकिन अपने विचारों से सही, सच्ची, सम्यक् जानकारी हमनें प्राप्त नहीं की तो इतनी जानकारियाँ हमारे लिए क्या कार्यकारी ? केवल अपनी विचारधारा ही उत्थान पतन का मार्ग बनाती है "भावना भव नाशिनी भावना भव वर्द्धिनी"। इसीलिए हम सभी अपने विचारों को देखें, खोजें, टटोलें, जानें-मानें पहिचानें कि हमारे विचारों का स्तर कैसा ? क्या है ?

卐

6. परतन्त्रताकी ओर बढ़ते हुए भारत को स्वतन्त्र बनाना है।

उदयपुर आदर्श बाल मंदिर एवं सुधर्म विद्यालय के विशाल प्रांगण के बीच जनसमूह को नयी चेतना से सृजित करते हुए वैज्ञानिक धर्माचार्य पूज्य कनकनंदी जी गुरुदेव ने कहा कि स्वतंत्रता- दिवस एवं रक्षा बंधन ये दोनों ही पर्व आत्म-विश्लेषण करने के लिए है। पर्व मनाने का उद्देश्य अपनें सही लक्ष्य को प्राप्त करना है। आज हम सभी लक्ष्य की डगर से हट रहे हैं इसीलिए स्वतंत्र भारत में भी परतन्त्र बनकर जी रहे हैं। यह भारत देश धर्म नीति, राजनीति, अर्थनीति, आध्यात्मिक दृष्टि, भौतिक दृष्टि सभ्यता, संस्कृति, कानून, शिक्षा सभी दृष्टियों से सभी क्षेत्रों में उन्नति - प्रगतिशील था। बड़े-बड़े सिद्धान्त, आविष्कार,. नियम हमारे देश के महान्-महान् चिन्तकों, विचारकों,दार्शनिकों ने दिये लेकिन आज सभी सिद्धान्त, आविष्कार, उपलब्धियाँ हमसे दूर होकर पाश्चात्य देशों में चली गयी क्योंकि हम आपस में असंगठित, ईर्ष्या, क्लेश, कूट, वैमनस्य, अहंकार के बीज बोते रहे। भारत को परतन्त्र बनाने में भारतीय ही अधिक जिम्मेदार है। क्योंकि जिस पृथ्वीराज से मुहम्मदगौरी को 17 या 21 बार पराजय का मुँह देखना पड़ा था लेकिन एक कपूत, राष्ट्रद्रोही जयचंद के कारण पृथ्वीराज को परास्त होना पड़ा था। जब इतने वीर, साहसी, पराक्रमी पृथ्वीराज को एक जयचंद के कारण परास्त होना पड़ा तब आज तो व्यक्ति-व्यक्ति घर-घर परिवार-परिवार गाँव-गाँव, नगर-नगर में जयचंद्र ही जयचंद है। सभी को अपनी सत्ता, सम्पत्ति कुर्सी की चिंता है। देश की बागडोर कहाँ से किधर जा रही है इसकी किसी को चिंता नहीं है। इस प्रकार भ्रष्टपतित, आततायी, अत्याचारी, पापाचारी गुण्डें खलनायकों के हाथ में भारत देश की बागडोर है ऐसे पतित भ्रष्ट खलनायकों की सेवा सुरक्षा के लिए प्रजा का भी करोड़ों रुपया सरकार बर्बाद करती है। क्या ऐसी भ्रष्ट सरकार से देश की सुरक्षा, समृद्धि हो सकती है ? केन्द्र सरकार, राज्य सरकार अनैतिक कार्यो को, बदमाश व्यक्तियों को बढ़ावा देती है। महान् आततायी पापाचारी वीरप्पन डाकू को पकडने में केन्द्र एवं राज्य सरकारें सफल नहीं हो पा रही है जबकि आज विज्ञान ने इतनी उन्नति प्रगति करली है कि जमीन के अंदर पड़ी हुई सुई

का भी पता लग सकता है तो क्या इतने बड़ वीरप्पन का पता नहीं लग सकता ? इसके पीछे सरकार की पूर्ण लापरवाही है।

आज हम सभी स्वतन्त्रता दिवस की 54वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। लेकिन क्या आप सभी यह अहसास करते हैं कि हम स्वतन्त्रता में जी रहे हैं। आज स्वतंत्रता दिवस मनाने का उद्देश्य बस इतना ही रह गया है कि बड़े-बड़े मंचों पर स्वतंत्रता दिवस का इतिहास पढ़ दिया, बच्चों से कुछ सांस्कृतिक प्रोग्राम करवाकर मिठाई बाँट दी बस इतना करके ही हम स्वतंत्रता दिवस की इतिश्री मान लेते हैं। यह हमारी अपने देश के गौरव के प्रति दीनता, पतितता, ह्रासता की निशानी है। हमें सकारात्मक- नकारात्मक दोनों तथ्यों की सही गवेषणा, विश्लेषण करके पर्व की सभी जानकारियों के बारे में सत्य तत्वों को चुनना चाहिए। आज हम सभी के समक्ष यह ज्ज्वलन्त प्रश्न है कि भारत ज्ञान-विज्ञान, सभ्यता,संस्कृति-प्रकृति, धर्म शिक्षा, कानून हर दृष्टियों से सर्वोपरि रहा फिर आज इतना गरीब देश कैसे बन गया। भारत अन्य सभी देशों की तुलना में सबसे गरीब देश है, ऐसा क्यों ? घर में बंदूक है अस्त्र-शस्त्र सभी उपकरण है ऐसे एक सेठ केघर में चोर घुस गया पत्नीने कहा घर में चोर आ गये! अरे! आ गये तो क्या हुआ चोर को मारने के लिए मेरे पास सभी अस्त्र-शस्त्र है। चोर सब सामान ले गया लेकिन अस्त्र-शस्त्रों का उपयोग ही नहीं किया तो क्या प्रयोजन उन अस्त्र-शस्त्रों के घरमें होने से। इसी प्रकार भारत देश में सत्ता,सम्पत्ति, वैभव सब कुछ प्रचुर मात्रा में था लेकिन हम आलसी, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, असंगठन में जीते रहे उपलब्धियों का घमण्ड करते रहे, पुरुषार्थ विहीन बनते गये।

आज हमें बाहरी शत्रु उतना नहीं मार रहे हैं जितना कि अन्तरंग शत्रु। अन्तरंग शत्रु है परस्पर में क्रोध, मान, माया, ईर्ष्या, घृणा, द्वेष, फूट, कलह, वैमनस्य आदि। पहले इन शत्रुओं के लिए छोटी-संकरी गलियाँ थी लेकिन आज इन शत्रुओं को प्रवेश पाने के लिए ये गलियाँ बड़ी-बड़ी विशाल हो गयी हैं। भारत में विदेशी आक्रान्ता मुट्ठी भर थे और हम भारतवासी हजारों की संख्या में थे फिर भी हम भारतीय उन मुट्ठीभर लुटेरों से गुलाम बन गये। सोमनाथ के मंदिर पर जब महमूद गजनवी ने आक्रमण किया तब उस मंदिर के पंडित-पुरोहित,ज्योतिषी पंचांग निकाल कर शुभ मुहूर्त देखते रहे कि शुभ मुहूर्त आने पर हम भगवान् की रक्षा करेंगे। भगवान् तो बहुत शक्तिशाली है वह अपनी एवं हमारी रक्षा करेगा

क्योंकि ईश्वर ही तो एकमात्र विश्व के समस्त प्राणियों का रक्षक है। ऐसी अकर्मण्यता, आलस्यता रुढिवादी धर्म मान्यताओं ने हमारे धर्म, पंथ, ग्रंथ, मूर्ति, मंदिर, संत, संस्कृति-सभ्यता, प्रकृति, उपलब्धियों का विनाश विध्वंश किया। हमारे यहाँ छोटे-छोटे बच्चें भी वीर बहादुर थे। नचिकेता जैसा छोटा बालक अपनी तपस्या के बल पर यम आचार्य के पास पहुँच गया था। दुष्यन्त का पुत्र शेर के बालक के साथ खेलता था। नालंदा, तक्षशिला जैसे बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों से विद्यार्थी विद्वान-धार्मिक, सुशिक्षित सुसंस्कारवान् होकर निकलते थे। वे अपने देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी धर्म, न्याय नीति का प्रचार-प्रसार करते थे।

आज हमारी नौका भारी तूफानों, झंझावातों में नहीं डूब रही है बल्कि नदी के किनारे आकर डूब रही है। आचार्य श्री ने अपने जीवन के प्रायोगिक अनुभव का दृष्टान्त देते हुए कहा कि यह बात सत्य है कि मैं जब घनघोर जंगलों के बीच कंटकाकीर्ण, ऊबड़-खाबड रास्ते से गुजरता हूँ तब मेरे पैरों में एक भी काँटे नहीं लगता लेकिन गाँव के निकट साफसुथरी सड़क पर काँटे लग जाते हैं। ऐसा क्यों होता है ? हमारी असावधानी लापरवाही के कारण भारत की दुर्दशा की यही कटु सत्य कहानी है। हम वीर-साहसी शेर होते हुए भी कायर आलसी भेड़ बन रहे हैं। जो आलसी स्वार्थी, कायर होते हैं उन्हें स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती। हमें स्वतन्त्रता केवल महात्मा गाँधी के कारण ही नहीं मिली बल्कि स्वतन्त्रता के मुख्य सूत्रधार तो महाराणा प्रताप जैसे वीर साहसी योद्धा थे। जिन्होंने अपने सुख-सत्ता, सम्पत्ति सभी को राष्ट्र के नाम पर तिलाँजलि देकर स्वयं ने जंगल-जंगल में दिन व्यतीत करके घास की रोटियाँ खायी थी। वास्तव में इसे ही कहते हैं सच्ची देशभक्ति, देश के प्रति मन-वचन-काय का बलिदान। महाराणा प्रताप के बाद 1857 में देश में मंगल पांड्या पुनः सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह आदि वीर, निर्भीक, साहसी, नौजवान हुए जिन्होंने अपने प्राणों की बलि देकर दुनियाँ को यह दिखा दिया कि केवल नारेबाजी या मंच पर बड़े-बड़े भाषण देने से देश को आजादी नहीं मिलेगी, बल्कि प्राणों का उत्सर्ग करके ही देश को आजादी मिल सकती है। सुभाषचंद्र बोस को मारने के लिए जब अंग्रेजी सरकार ने षडयंत्रणा रची तो सुभाषचंद्र बोस ने वीरता भरे शब्दों में कहा था कि मेरे मरने के बाद मेरे एक-एक रक्त के कण से एक-एक सुभाषचंद्र बोस तैयार होगा। उसी प्रकार आज इस परतन्त्रता की ओर बढ़ते हुए भारत की दुर्दशा देखकर मैं शिविर-संगोष्ठी प्रवचन-लेखन-पुस्तकों

आदि के माध्यम से छोटे छोटे बच्चों के अंदर ऐसे सुसंस्कारों का बीजारोपण कर रहा हूँ कि इन बच्चों से ही यह भारत पुनः विश्वगुरु बनें। सुभाषचंद्र बोस का यह नारा था कि 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' उसी प्रकार आप सभी को मेरा आह्वान हैं– तुम मुझे सहकार दो मैं तुम्हें एक वैज्ञानिक धर्म दूँगा। आप सभी मेरी सेना बनो मैं कृष्ण के रूप में सारथी का काम करूँगा। इस भारत के पापाचार, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार को आगे आकर एक समग्र क्रांति के द्वारा मिटाना होगा। और इस समग्र क्रांति का सूत्रधार, कर्णधार मैं बनूँगा; आप सभी मेरी सहायता करें। जो देश की रक्षा हेतु अपने प्राणों को बलिवेदी पर समर्पण करता है उसकी निश्चित ही सद्गति होती है क्योंकि जब देश में परतंत्रता होती है तब धर्म, ग्रंथ, संत, सभ्यता, संस्कृति, प्रकृति, आध्यात्म, शिक्षा, कानून, स्त्रियों आदिकी बहुत बड़ी क्षति होती है। जब देश स्वतंत्र होता है तब ये सब सक्रिय कार्य करते हैं। इसीलिए देश की रक्षा–सुरक्षा करना प्रथम कर्त्तव्य व सर्वश्रेष्ठ धर्म है। जब हमारा देश विदेशी आक्रान्ताओ से परतन्त्र हुआ तब धर्म, संत, ग्रंथ, सभ्यता,संस्कृति आदि का ह्रास हुआ। लेकिन प्रकृति का नियम है वह अधिक दिनों तक अन्याय–अत्याचार को सहन नहीं करती। जब–जब इस धरती पर पाप अधिक बढ़ता है तब–तब कोई न कोई महान् अवतार इस वसुन्धरा पर जन्म लेता है और उस अत्याचार–पापाचार को समाप्त करता है। अंग्रेजों ने जब पिस्तौल में गाय और सूअर की चर्बी से युक्त कारतूसों का प्रयोग किया तब एक जोरदार क्रांति हुई और आज उसी देश की सरकार गाय का माँस विदेशों को निर्यात कर रही है। गाय हमारी माता के समान है। माता के ऋण से तीन लोक की संपदा देने पर उऋण नहीं हुआ जाता। ऐसी माँ की हत्या कर रहे हैं; जो हमें दूध, घी आदि पोष्टिक तत्व देती है। जिसका गोबर, पेशाब तक दवाईयाँ बनाने के काम आता है। ऐसी उपयोगी गाय को भी हम मार रहे हैं। इससे अधिक निष्ठुरता, स्वार्थपरता और क्या हो सकती है ? यह पाप की अंतिम पराकाष्ठा की सूचना है। इस पाप को बचाने के लए न्यूक्लियस हाइड्रोजन अणुबम भी कुछ काम नहीं कर पायेंगे। 24 तीर्थंकर, हिन्दुओं के 33 हजार देवता, पीर–पैगम्बर,गोड कुछ नहीं करपायेंगे। कोई आपके इस पाप से बचने के लिए समर्थ नहीं हो पायेगा। क्योंकि प्रकृति के एक–एक कण में हजारों न्यूक्लियस, हाइड्रोजन अणुबमों से भी अधिक शक्ति है। जो प्रकृति का एक कण भी नाश करेगा प्रकृति उसे क्षमा

नहीं करेगी। इसीलिए तो आज जगह–जगह भूकम्प, भुखमरी, दुर्भिक्ष, अकाल, महामारी, अनेको महाभयंकर बीमारियाँ, अकाल, शोषण, अन्याय, अत्याचार, पापाचार, अशांति, अराजकता, दुःख, सताप, क्लेश, पीडा विकराल गति के साथ बढ़ रही है। हमारी मानवीय संवेदना, दया, करुणा, क्षमा, परोपकारिता, प्रेम वात्सल्यता तो बिल्कुल अलविदा हो गयी है। क्योंकि, आज हम स्व संतान का वध करने में भी नहीं हिचकिचाते हैं। माँ–बाप बच्चे को जन्म ही नहीं लेने देते; गर्भपात करा देते हैं। दहेज के लोभी डाकू बहु की हत्या कर देते हैं। स्त्रियों का शोषण करते हैं। जिस भारत देश में स्त्री को सरस्वती देवी के रूप में पूजा जाता था; आज उस स्त्री का गर्भावस्था में ही मरण किया जा रहा है। कैसे सहन कर पायेगी इतने बड़े अत्याचार, पापाचार को ये प्रकृति ? इस प्रकृति में अपार शक्ति है। इन घिनौने पापों को प्रकृति कभी भी सहन नहीं करेगी। यह विज्ञान का नियम है कि जिसके पास अधिक शक्ति होती है वह गलत कार्यों को एकदम सहन नहीं कर पाता। इस शक्ति के बल पर उसका तुरंत प्रतिरोध करता है। मगर इस बढ़ते पापाचार पर नियन्त्रण नहीं हुआ तो यह भारत पहले से भी अधिक परतंत्र बनकर विनाश को प्राप्त होगा। क्योंकि पाप का फल भुगतना ही पड़ेगा। यह कर्म सिद्धान्त बहुत ही बलवान् – शक्तिशाली है। इस कर्म ने तीर्थंकर, चक्रवर्ती जैसे दिव्य पुण्य पुरुषों को भी माफ नहीं किया तो सामान्य व्यक्ति की तो फिर बात ही क्या ? जो जैसा कर्म करता है उसका फल उसी रुप में निश्चित मिलता ही है। गुरु नानक देव ने भी कहा है–

"जो औरों का सिर काटे, अपना रहे कटाय।
धीरे धीरे नानका बदला कहीं न जाय॥"

तुलसीदास ने भी कर्म सिद्धान्त के महत्त्व को स्वीकारते हुए लिखा हैं।–

"विश्व प्रधान कर्म करी राखा।
जो जैसा करही फलहूँ तैसे चाखा॥"

इस प्रकार स्वतन्त्रता दिवस पर हम सभी अपने कर्मों का, कार्यों का आत्मविश्लेषण करें। यह मेवाड़ की भूमि बलिदानों की भूमि है। संपूर्ण भारत परतंत्र हो गया था लेकिन मेवाड़ ने अपने शान–बान आन का बलिदान नहीं किया। यहाँ के बलवीर साहसी, निर्भयी सपूतों ने अपना स्वाभिमान नहीं खोया। महाराणा प्रताप ने जीते जी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। यहाँ की धाय तक में देश

क प्रति गौरव का भाव था। देश की रक्षा हेतु अपने बच्चे तक का बलिदान कर दिया। वहाँ की स्त्रियाँ अपने शील की रक्षा हेतु अग्नि में कूदकर जौहर करती थी लेकिन अपने शरीर को किसी को छूने तक नहीं देती थी। ऐसा उज्ज्वल गौरव गाथाओं से भरा हुआ मेवाड़ का एक एक कण है। मेवाड़ के अंदर आज भी वह कण विद्यमान है। इसीलिए मेरी पूर्ण भावना है कि मैं अपने कार्य का शुभारंभ इस मेवाड़ की धरती से ही प्रारम्भ करूँ। मैं एक समग्र क्रांति चाहता हूँ। आप सभी के अंदर गुप्त सुप्त शक्ति है मैं उस शक्ति को प्रगट-उजागर करने आया हूँ। जिसप्रकार शिवाजी की माता जीजाबाई और गुरु समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को शिक्षा दी थी कि शिवाजी! देश की रक्षा-सुरक्षा हेतु घर-घर जाकर झोली फैलाओ तलवार को कभी म्यान में नहीं रखना, देश की रक्षा हेतु सिर भी देना पड़े तो डरकर पीछे मत हट जाना, निर्भीकता निडरता से आगे आकर अपने को समर्पित कर देना। इस प्रकार की प्रेरणा/शिक्षा मिलने पर ही शिवाजी महाराष्ट्र के नायक बने। सभी को आगे बढ़ाने में गुरुओं का मार्गदर्शन ही कामयाब हुआ है। इसीलिए मैं भी इस अतिथिपरायण वसुंधरा के वीर सपूतों की गुप्त-सुप्त चेतना को जगाने इस मेवाड़ में आया हूँ। आप सभी शुतुरमुर्ग की तरह बालू में मुँह डालकर अपने को स्वतन्त्र मान रहे हो। लेकिन मैं इसे स्वतंत्रता नहीं मानता बल्कि घोर परतंत्रता मानता हूँ क्योंकि आज भारत छोटे-छोटे देशों से भी भयभीत है। कितनी हत्यायें मार काट हो रही है लेकिन सरकार कोई रक्षा-सुरक्षा नहीं कर पा रही है। यह सब स्वतंत्रता के नाम पर हिंसा, कायरता, नपुंसकता है। क्योंकि पाप को सहन करना भी पाप ही है। गुरुगोविन्दसिंह ने अपने शिष्यों के हाथ में माला और भाला दिया था। समर्थ गुरुरामदास ने अपने वीर शिवाजी शिष्य को तलवार की शिक्षा दी, चाणक्य ने चंद्रगुप्त को कूटनीति सिखाई, गाँधीजी ने अपने शिष्यों को निर्देश दिया कि मर जाना लेकिन अनीति पर मत चलना, श्रीरामचंद्रजी ने पापी-दुष्टों का संहार किया, भगवान् महावीर-बुद्धने हिंसात्मक प्रवृत्तियों को रोकने, मूढ़ मिथ्या मान्यताओं के विरुद्ध एक प्रचण्ड क्रांति की थी। श्रीकृष्णने महाभारत रचाकर पापी कौरवों का अंत किया, स्वामी विवेकानंद, सहजानंद, नानक देव आदि ऋषी पुरुषों ने सामाजिक विकृतियों को दूर किया। रानी लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप, सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, मंगल पाड्या आदि नौजवानो ने देशहित के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया लेकिन अन्याय-अनीति के आगे अपना सिर

नहीं झुकाया। इन सभी उदाहरणों से हमें यही शिक्षा मिलती है कि मीठे उपाय सफल न हो तो कड़वे उपाय अपनाने चाहिए लेकिन हरहालत में अनीति, अन्याय, पापाचार भ्रष्टाचार का अंत करना चाहिए।

करुणा, क्षमा, दया, ऋजुता, सरलता अच्छे गुण हैं लेकिन इनका उपयोग हर जगह-हर समय - हर व्यक्ति के साथ गुणकारी- लाभकारी नहीं होता। यदि पात्र-कुपात्र का विवेक किये बिना अच्छे भोजन को कुपात्र में डालेगें तो निश्चित ही अच्छा भोजन खराब होगा। इसीप्रकार अनीति, अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार करने वालों के साथ दया, क्षमा, संवेदना करने पर इन दुष्प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता है। मानवीय साहसिकता, धर्म निष्ठा की एकमात्र सशक्त कड़ी तो यही है कि जहाँ भी अनीति, अन्याय, अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार हो रहा हो वहाँ कायरता छोड़कर इन दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन करना चाहिए। जब तक जन आक्रोश के साथ यह कदम नहीं उठाया जायेगा तब तक पाप प्रवृत्तियों की जड़े मजबूती के साथ फलती फूलती रहेगी। इसीलिए यह सत्य ही है कि ईश्वर के प्रति जितना प्रेम समर्पण, श्रद्धा आस्तिकता है, धर्म के प्रति जितनी निष्ठा है उतन ही नास्तिकों के प्रति, अधर्म के प्रति द्वेष भी होना चाहिए। वरना ईश्वर और शैतान, पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, स्वर्ग-नरक, घृणा-क्षमा को समझने में बड़ी भारी भूल होगी। और यह भूल ही एक दिन समस्त व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक, वैश्विक सुख-शांति-समृद्धि को समाप्त कर देगी। इसीलिए पाप को सहन करते रहना भी एक बडा अन्याय, अत्याचार, पापाचार ही है।

मानव श्रेष्ठ एवं विवेकशील प्राणी है क्योंकि उसकी रीढ सीधी है, 10 अरब शैल के द्वारा हमारा मस्तिष्क बना हुआ है। सोचने समझने की शक्ति, विवेक सबसे अधिक मनुष्य के पास ही है। प्रकृति यह संदेश देती है कि सीना तानकर चलो, झुककर यानि दीन-हीन, अनाथ, असहाय बनकर मत रहो। हम डर-डरकर दबे-दबे चल रहे हैं, हमारी सारी सक्रियता, नष्ट हो चुकी है। आज का मानव विवेक-अविवेक, उचित-अनुचित, हित-अहित सभी का भेद भूल गया है। जिसके साथ जिसकी मित्रता है वह उसके पाप, अनीति, अत्याचार, अनाचार, दोष गलतियों का चित्र-विचित्र ढंग से समर्थन करता है और शत्रु के दोष न होने पर भी शत्रुता का बदला लेने के लिए गुणों को भी दोष में बदल लेता है। लेकिन यह सच्ची मित्रता का लक्षण नहीं किन्तु सच्चा मित्र तो वह होता है जो मीठे कड़वे उपायों

से उसकी अनैतिक दुष्प्रवृत्तियों को सुधारे, गलत मार्ग से सुमार्ग का रास्ता बतावें। जो ऐसा नहीं करके उसका सहयोग समर्थन करता है वह अपने मित्र को पतन के गढ्ढे में डालता है। पूर्ण स्वतंत्रता का उपदेश तो भगवान् आदिनाथ, बाहुबली आदि ने दिया। बाहुबली ने अपना स्वाभिमान जाने नहीं दिया। बाहुबली आदि महान्-महान् पुरुषों से हमें शिक्षा लेनी चाहिए कि मान-घमण्ड को त्यागकर स्वाभिमान पर आँच नहीं आने देगे। हमें भी धर्म के लिए, गुरु के लिए, राष्ट्र से जन-जन के हित के लिए स्वाभिमान को कायम रखते हुए दुष्प्रवृत्तियों का जड़ से उन्मूलन - खण्डन - विखण्डन करना है।

मैं स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में एक वैज्ञानिक, सत्य साधक, साधु होने के नाते आप सभी को यह वार्निंग (चेतावनी) दे रहा हूँ कि आप सभी संकीर्णताओं को बाह्य ढोंग आडम्बर मिथ्या, रुढिगत कल्पनाओं का त्याग करके शनैःशनैः परतंत्रता की ओर बढ़ रहे भारत देश में एक समग्र क्रांति करके पुनः विश्वगुरु बनाओ। मैं सभी लोगों की सुप्त-गुप्त शक्तियों को जागती हुई देखना चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता कि महात्मा गाँधी, सुभाषचंद्र, लोकमान्य तिलक, भगतसिंह आदि राष्ट्र के महान् व्यक्ति किसी दूसरें के घर में जन्म ले अर्थात् हमें अपना स्वर्णिम भविष्य स्वयं ही बनाना है; बिना किसी के आगे भीख मांगकर। क्योंकि 'मांगन मरण समान है।' इसीलिए हम सभी भारतवासियों को एकता, संगठन के सूत्रों में बँधकर अपने देश को संगठन एकता की डोर में बाँधना है।

आज भी देश की बागडोर साधु संत कुछ हद तक संभालें हुए है क्योंकि उनकी आध्यात्मिक शक्ति में इतनी क्षमता, तेज, ओज है कि उस आध्यात्मिक शक्ति के आगे अन्य कोई शक्ति टिक नहीं सकती। इस शक्ति के आगे न्यूक्लिस, हाइड्रोजन अणुबमों की शक्तियाँ भी कम हैं।

आचार्यश्रीने अंतिम शब्दों में सभी अभिवावकगण, अध्यापकजनों को प्रेरणा देते हुए बच्चों को सुशिक्षा से सुसंस्कारित करने के लिए कहा कि बच्चे मन के सच्चे अक्ल के कच्चे होते हैं। उन्हें हम जिस प्रकार के साँचे में ढालेंगे वे वैसे ही बन जायेंगे। इसीलिए बच्चों के मानसिक, शारीरिक आत्मिक विकास को उन्नत करने के लिए उनका पालन पोषण-संवर्धन उचित वातावरण में होना चाहिए। बच्चों को सुसंस्कारित बनाने के लिए परिवार एवं विद्यालय की अग्रिम भूमिका रहती है। आज के माँ-बाप भी अपने स्वार्थ के वशीभूत बच्चों की मानसिक क्षमता

को नहीं समझते हुए उसे अपने अनुसार डॉक्टर-इंजीनियर बनने के हिसाब से शिक्षित करने के लिए जोर देते हैं। जबकि शिक्षा का यह स्वरूप नहीं। शिक्षा का मुख्य स्वरूप तो वह है जो व्यक्ति का हर दृष्टि कोण से सर्वांगीण विकास करें। बच्चें की क्षमता शक्ति को देखकर उसे उसकी इच्छानुसार ही पढ़ने को प्रेरित किया जाना चाहिए। आज की शिक्षा मालिक नहीं मजदूर बना रही है। किसी के अंदर आत्मिक, आध्यात्मिक, सैद्धांतिक व्यवहारिक, नैतिक गुणों का प्रवेश नहीं है। बस शूट-बूट टाई पहनकर बड़े-बड़े बस्तों का भार लादकर गधे की शिक्षा को सभी अपना रहे हैं। इसीलिए आज साक्षर लोग राक्षस बन रहे हैं। एक बार निरक्षर लोग सरल-सहज, विनम्र, मृदु मिल जायेंगे लेकिन दो-चार अक्षर पढ़ने वाले अकड़कर चलेंगे, किसी का विनय-सम्मान नहीं करेंगे। इस सब में बच्चे कम दोषी है। बल्कि परिवार, समाज, राष्ट्र सरकार आदि अधिक दोषी है। इसीलिए शिक्षा संबंधी त्रुटियों-खामियों के संशोधन हेतु मैं शिक्षा संबंधी ही संगोष्ठी कर रहा हूँ। शिक्षा का सही स्वरूप, उद्देश्य, महत्व को आप सभी समझे एवं बच्चों को सही सुशिक्षा से सुसंस्कारवान् बनायें क्योंकि ये नन्हें मुन्नें बच्चें ही आगे चलकर राष्ट्र के समुन्नत, उन्नायक कर्णधार बनेगें।

रक्षाबंधन स्वतंत्रता दिवस दोनों ही पर्वो से आज हम सभी को यही शिक्षा-संकल्प लेना है कि फूट-नोट-वोट का बलिदान देकर सत्यनिष्ठा, आत्मविश्वास, आपसी प्रेम-संगठन, परोपकार, वात्सल्य, सहिष्णुता के गुणों से सहित होकर व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, वैश्विक सुख शांति, समृद्धि हेतु समग्र क्रांति के साथ रक्षा करेंगे और भारत की परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़कर पुनः स्वतन्त्र, विश्वगुरु बनाकर रामराज्य की स्थापना करेंगे।

7. नारायण श्रीकृष्ण का बहुआयामी व्यक्तित्व

आचार्यश्री कनकनन्दीजी गुरुदेव ने कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष में सिनियर सैकण्डरी स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थीयों को शिक्षकों को सम्बोधित करते हुये कहा कि मैं कृष्ण के बारे में सामाजिक दृष्टिकोण से, एतिहासिक दृष्टिकोण से वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, पर्यावरण दृष्टिकोण से, संगीत और कला की दृष्टिकोण से कृष्ण का जो महान् व्यक्तित्व है उसके बारे में कुछ प्रकाश डालूँगा।

वर्तमान युग एक वैज्ञानिक युग है, भले ही यहाँ पर विज्ञान का प्रकाश कम है तथापि जब तक हम विज्ञान के साथ आगे नहीं बढ़ेंगे तब तक हम पीछे हो जायेंगे जैसे कि मध्यकाल में हमारा भारत पीछे हो गया था। केवल कृष्ण एक नटखट बालक नहीं थे। एक योद्धा नहीं थे, गीता के उपदेश के रूप में एक संत नहीं थे, परंतु कृष्ण का रूप एक बहुआयामी था। मैं आज उसके बारे में बताऊंगा। पहले मैं कृष्ण का इतिहास उसके बाद उसका मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में वर्णन करूँगा जो मैंने शोध और बोध किया है; रिसर्च किया है उसके बारे में प्रकाश डालूँगा।

जो कथा कहानी आप लोग पंडितों के मुख से सुनते हैं वो कथा कहानी यहाँ कम रहेगी। एक वैज्ञानिक जो काम करता है वो विषय यहाँ आप लोग मुझसे सुनोगे।

सर्वप्रथम मैं कृष्ण का संक्षिप्त इतिहास बताऊँगा। हमारा भारत जो महान् बना केवल यहाँ के जो पर्वत नदी, नाल, वृक्ष है इसके कारण महान् नहीं बना। हमारा भारत जो महान् बना भारत के कुछ महान् सुपुत्रों के कारण बना। उसमें से नारायण कृष्ण एक थे। हमारे इस महान् भारत को हमारे भारतीयों ने नष्ट भ्रष्ट और पद दलित कर दिया है। इसीलिए मैं चाहता हूँ हमारे भारत के भ्रष्टाचार को दूर करना। और ये भ्रष्टाचार दूर होगा। हमारे स्कूल कॉलेज के विद्यार्थियों के माध्यम से और मैं आप लोगों में हर बालक में एक कृष्ण देखना चाहता हूँ। आप लोग साधारण बालक नहीं हो। जिसके बारे में बताने जा रहा हूँ ऐसा कृष्ण आपके अन्दर बैठा हुआ है। राधा बैठी हुई है। नारायण श्री कृष्ण का जो स्वरूप है उसको सुनना चाहिए और जीवन में उतारना चाहिए। तब ज्ञात होगा हमारा भारत महान क्यों बना था? उसके लिए कारण क्या था? क्या हमारा भारत कंस के कारण महान् बना? रावण के कारण या दुर्योधन के कारण बना? नहीं, हमारा भारत महान् बना- रामचन्द्र जी के कारण, कृष्ण के कारण, बुद्धके कारण महात्मा गाँधी के कारण और महावीर के कारण। और मैं प्रत्येक विद्यार्थी को एक महावीर भगवान् बनाना चाहता हूँ और बुद्ध बनाना चाहता हूँ। और प्रत्येक बच्ची को गार्गी और सुन्दरी बनाना चाहता हूँ। परन्तु दुर्भाग्य है कि हमारा महान् भारत जो अभी महाभारत है इसमें अधिकतर रावण और कंस का ही स्वराज्य हैं। इसलिए आप लोगों को विचार करना चाहिए कि आप लोग क्या बनना चाहते हों। हमारा कर्त्तव्य ही हमको

अधिकार देता है। आप लोग मत विचार करो कि आप लोग स्कूल में आ गए तो आप लोग कोई शिक्षित बन गए कोई ज्ञानी बन गए। इसलिए पहले आपको कर्त्तव्य करके दिखाना चाहिए जैसे-नारायण कृष्ण ने कर्त्तव्य करके दिखा दिया था।

नारायण कृष्ण का जन्म ई.पू. 3238 में हुआ था। मानों अभी से पाँच हजार दो सौ चौंतीस वर्ष पहले हुआ था और 4 सितम्बर बुधवार को रोहिणी नक्षत्र में रात को 12 बजे हुआ था। और उनकी सम्पूर्ण आयु 125 वर्ष की थी और उन्होंने 7 वर्ष की आयु में गोवर्द्धन पर्वत को उठा लिया था। 15 वर्ष की आयु में हमारे राष्ट्रीय दुश्मन अत्याचारी कंस का वध किया था। और 12 वर्ष अध्ययन किया था, उनके गुरु संदीपन ऋषि के आश्रम में ये सामान्य उनका इतिहास है।

हिन्दू धर्म में और कविताओं में कृष्ण को 16 कलाओं का अवतार माना है। मैं एक वैज्ञानिक साधु हूँ। भले मैं एक साधु हो गया लेकिन मैं एक वैज्ञानिक से भी महान् वैज्ञानिक हूँ। विज्ञान के सिद्धान्तों को भी अंधविश्वासी होकर मैं स्वीकार नहीं करता हूँ। जो किताब आप हिन्दी या अंग्रेजी या विज्ञान की पढ़ते हों उसमें भी मैंने बहुत सी गलतियाँ निकाली है। विज्ञान में आइस्टीन के थ्योरी से लेकर के डार्विन के थ्योरी में जो कमियाँ है उसे भी मैंने निकाली हैं। कृष्ण में जो 16कलाएँ मानते हैं वे कौनसी कलाएँ थी? जिस प्रकार 16 कलाओं में चन्द्रमापूर्ण हो जाती है एक-एक कला बढ़ते-बढ़ते। इसी प्रकार उनमें 16 कलाएँ थी। कला का अर्थ Art / Science में इसे गुणधर्म कहेंगे। उनमें 16 विशेषताएं थी, और वे 16 विशेषताएं क्या थी। इनके माध्यम से मैं कृष्ण का इतिहास और उनका व्यक्तित्व बताऊँगा जो आप लोग स्कूल, कॉलेज की किताबे में भी नहीं पढ़ सकते हो, ना कोई किताब में है। पहली विशेषता है उनका नटखट होना आप देखते होंगे नाटक में, कविताओं में उनके बारे में जो वर्णन आता है उनको बहुत नटखट कहा गया है। ये उनका बाल्यावस्था का एक मनोवैज्ञानिक वर्णन है, ये बाल मनोविज्ञान है।

बच्चों को बाल्यावस्था में खूब खेलना चाहिए और मनोरंजन करना चाहिए। क्योंकि उनसे शारीरिक और मानसिक विकास होता है। इसलिए बच्चों को नारायण कृष्ण से शिक्षा लेनी चाहिए कि खेलते समय खेलना चाहिए और पढ़ते समय पढ़ना चाहिए। बच्चों! आप लोग पढ़ते हैं तो आप लोगों को याद नहीं रहता है। आगे

पाठ पीछे सपाट। ऐसा क्यों होता है ? इसका कारण यह है, आप लोगों को पढ़ने की थ्योरी मालूम नहीं है। आप लोग तोता के जैसे रटते हो इसलिए आप लोगों को कुछ याद नहीं रहता है। मैं जब आपके जैसे विद्यार्थी था उस समय जो पढ़ा था वो मुझे अब भी अच्छी तरह से सब याद है। मुझे याद है किन्तु आप लोगों को क्यों याद नहीं है ? क्योंकि आप लोग समय के अनुसार काम नहीं करते। एवं जिस समय खेलना चाहिए उस समय खूब खेलना चाहिये, जिस समय पढ़ना चाहिये उस समय खूब पढ़ना चाहिये। इसलिए नारायण कृष्ण का एक रूप है– खिलाड़ी / नटराज / नटखटियाँ। अर्थात् बच्चों को जितना समय पढ़ना चाहिए उतना समय खेलना भी चाहिए। यदि आप लोग खेलोंगे नहीं तो आप लोगों का शारीरिक व मानसिक विकास नहीं हो पायेगा। इसलिए पहले कृष्ण से हमें यह शिक्षा मिलती है कि शारीरिक विकास के लिए खेल भी अनिवार्य है। दूसरी विशेषता थी - मक्खन चोरी। कृष्ण मक्खन चोर थे क्यां वे चोर थे ? डाकू थे ? वे ऐसी चोरी क्यों करते थे ? कभी आप लोगों ने विचार किया ? उसका कारण। जो दूध है वह फुल फुड है। विज्ञान से यह सिद्ध हो गया कि दूध एक पूर्ण आहार है। जब तक आप दूध नहीं पिओगे, मलाई नहीं खाओगे तब तक आपका शारीरिक एवं मानसिक विकास नहीं होगा। क्योंकि हमारा शरीर है वह विभिन्न तत्त्वों से बना हुआ हैं। और शरीर के लिए, बुद्धिके लिए विभिन्न विटामिन्स चाहिये और सबसे पूर्ण आहार है दूध, कृष्ण ने यह सिद्ध कर दिया– कि यदि माँ बच्चों को दूध, मलाई खाने को नहीं देती है तो बच्चे को चोरी करके भी खा लेना चाहिए। यह तुम्हारा जन्म–जात अधिकार है। जैसे–तिलक ने कहा था कि– "स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।" इसी प्रकार दूध पीना भी बच्चों का जन्म–जात अधिकार है।

अभी विज्ञान में सिद्ध हो गया है कि यदि माताएँ बच्चों को दूध नहीं पिलाती हैं तो माता को स्तन कैंसर हो जाएगा और बच्चा बुद्धिहीन होगा। प्राणी–विज्ञान में सिद्ध हुआ है कि, जो बच्चा ज्यादा समय तक दूध पीता है वह बच्चा बहुत अधिक बुद्धिमान होता है और जो बच्चा कम दूध पीता है उसकी बुद्धिलब्धि कम हो जाएगी। इसलिए माताओं का कर्त्तव्य हैं कि बच्चों को पूरा दुध पिलाएँ। माना कि कभी–कभी माँ दूधनहीं पिलाती हो तो आप लोगो का कर्त्तव्य है, अधिकार है कि आप उस बर्तन को फोड़कर के तोड़कर के फैंक दो। और दूध चोरी करके पी लेना चाहिए। ये बच्चों का जन्मजात अधिकार है। उसमें कोई चोरी का, पाप

का दोष नहीं लगेगा। नारायण कृष्ण ने यह सब व्रज में देखा था। व्रज का अर्थ 10 हजार गाय। मतलब जहाँ वह थे उस गाँव में 10 हजार गाये थीं। इससे उसका नाम पड़ गया व्रज। 10 हजार गाय होते हुए भी सब दूध कंस ले लेता था। कंस के डर के मारे गोपाल सब दूध दे देते थे। कृष्ण ने यह सब अध्ययन कर लिया क्योंकि वे तो बहुत बुद्धिमान थे, साहसी थे। उन्होंने एक अभियान चलाया कि सब बच्चे दूध पीओ और मलाई खाओ। यदि दूध तुम्हारे माँ–बाप नहीं देते है तो चोरी करके भी खाओ। यदि तो भी बाधा पहुँचाते है तो मटका फोड़ दो। इसलिए मैं बच्चों! तुमको तीन सूत्र दिये थे रक्षाबंधन पर्व में– वामन के तीन पैर अर्थात् संस्कारवान् बनो, संगठित बनों और अन्याय के विरोध में लड़ना सीखो।

इसी प्रकार बच्चों तुम्हारे परिवार में भी हों, समाज में भी हो, स्कूल में भी हो या तुम्हारे राष्ट्र में भी हो। यदि किसी प्रकार का अन्याय हो तो उसके विरुद्ध कदम उठाना चाहिये। इसलिए ये जो 'मटका फोड़' नाटक बच्चे के हैं उसका मनोवैज्ञानिक कारण, सामाजिक कारण और स्वास्थ्य की दृष्टि से दूध खूब पीना चाहिए और मलाई ज्यादा खानी चाहिए। उसके साथ–साथ आगे जाकर के जो कंस के लिए दूध देते थे उसे भी बंद कर दिया। भले कंस उनका मामा था और शक्तिशाली राजा भी था, और कृष्ण को केवल 12–13 वर्ष का लड़का था तथापि उन्होंने क्रांति की, कि कंस को कोई दूध नहीं देगा क्योंकि यदि कंस को दूध दे देंगे तो बच्चे दूध कहाँ से प्राप्त करेंगे। यदि बच्चे दूध नहीं पीयेंगे तो वे दुर्बल हो जायेंगे। शारीरिक व मानसिक रूप से भी दुर्बल हो जायेंगे। इसलिए उन्होंने कंस की परवाह नहीं की और मना कर दिया कि दूध मत दो।

अभी विज्ञान में सिद्ध हो गया कि जो जेलीफोश से लेकर मानव तक जो विकास हुआ उसमें पहले जलचर फिर थलचर फिर वन–मनुष्य, फिर मनुष्य। अभी सबसे बड़ा मस्तिष्क मनुष्य के पास है। सबसे ज्यादा समय दूध पीता है मनुष्य! इसलिए मनुष्य की बुद्धि सबसे ज्यादा होती है और जो दूध नहीं पीता है जिसकी दूध के प्रति घृणा है जानना चाहिए उसकी बुद्धि कम है। इसलिए कृष्ण ने कंस को दूध देना बंद कर दिया। उसके साथ–साथ बांसुरी वादक भी थे कृष्ण। कृष्ण बांसुरीवादक क्यों थे ? और गोपाल थे। भारत में अभी केवल पशु तक की ही हत्या नहीं हो रही है। हिन्दू लोग गाय को माँ बोलतेहैं परन्तु हिन्दु के जैसे मातृहत्या करने वाले मुसलमान भी नहीं है। जैनलोग स्वयं को/अहिंसक मानते हैं परन्तु जैन

जैसे क्रूर हिंसक दूसरे कोई भी नहीं है, मुसलमान भी नहीं। क्योंकि अभी सबसे बड़े बूचड़खाना खोला था एक जैन था। हिम्मतलाल कोठारी। और भारत में जो 13 गौ बूचड़खानें हैं उसमें से 10 बुचडखाने हिन्दुओं के और 3 बुचडखाने जैनों के हैं। केवल हिन्दु लोग और केवल जैन लोग ढोंग मचाकर रखा है। जैन लोग गाय पालन नहीं करते, गाय की सुरक्षा नहीं करते है। हिन्दू बड़े-बड़े सेठ, साहूकार, शिक्षित व्यक्ति गाय पालन नहीं करते हैं और गोपाल की पूजा करते है। गोपाल माने कृष्ण। जो गाय का पालन नहीं करते, गायकी सुरक्षा नहीं करते हैं वो कभी भी नारायण कृष्ण माने गोपाल के भक्त नहीं हो सकते है। मैं तो मानता हूँ जो गोपाल के भक्त है वो ही ज्यादा गाय के हिंसक है। जो भाषण झाड़ते है, मांस निर्यात मत करो, हिंसा मत करो, गाय का पालन करो परन्तु जितने नगर के बड़े-बड़े लोग सेठ, साहूकार, टाटा, बिरला, गोदरेज क्या गाय का पालन करते हैं ? उनको ये मालूम नहीं कि गाय खुरों से दुध देती है कि सींग से दूध देती है ? गाय मुँह से खाती है कि पूँछ से खाती है ? यह भी मालूम नहीं है। और ये बन गये गोपाल के भक्त। क्या जो गाय का पालन नहीं करता है, गाय की सुरक्षा नहीं करता हो वो गोपाल का भक्त बन सकता है ? जैसे तुम्हारे स्कूल में, तुम्हारे विद्यालय में खटमल, मच्छर, चींटी, कीड़े-मकोड़े हैं, यहाँ जन्म लिये हैं यही रह रहें और यहीं मर जाएंगे। क्या वे विद्यार्थी बन गए ? नहीं, जो यहाँ आकर के अध्ययन करता है वह विद्यार्थी है। इसी प्रकार जो नारायण श्रीकृष्ण ने यह कहा- भारत कृषिप्रधान और ऋषि प्रधान देश है। जब तक यहाँ पर गाय का पालन नहीं होगा तो बैल पैदा नहीं होंगे और कृषि नहीं होगी, अनाज पैदा नहीं होगा, दूध नहीं मिलेगा। दहीं नहीं मिलेगा, मक्खन नहीं मिलेगा तो हमारा देश मांसाहारी हो जाएंगा। क्रूर हो जाएँगा, दुर्बल हो जाएँगा। इसलिए कृष्ण गोपाल थे। आप लोग चित्रादि में देखते होंगे जहाँ कृष्ण होंगे वहाँ गाये अवश्य होगी इसका क्या मतलब ? भारतीयों के उनके घरमें शायद गाय भी नहीं होगी और बन गए गोपाल के भक्त। बन गए कृष्ण के भक्त! इसी लिए कृष्ण ने कहा, जो गाय को पालन करेगा, जो गायों की सुरक्षा करेगा वही भगवान् कृष्ण का भक्त बनेगा, महावीर का भक्त बनेगा। दूसरा कोई भक्त नहीं है। वेणुगोपाल एक विशेषण। कृष्ण बांसुरी बजाते थे बांसुरी क्यों बजाते थे ? बांसुरी बजाने से गाय घास अच्छी चरती हैं और स्वस्थ रहती है और बांसुरी के माध्यम से वो गायों को बुलाते भी थे और

वापिस भी भेज देते थे। बांसुरी के माध्यम से वो दूर से गायों को बुला लेते थे। और दूर भेज भी देते थे क्योंकि बांसुरी में जो विभिन्न राग है उससे गायों को पता चल जाता था कि कृष्ण हमें बुला रहे हैं और वापिस भेज रहे हैं। और दूसरा एक है वे संगित प्रिय थे। क्यों ? आप लोग एक महान् वैज्ञानिक आईस्टीन का नाम सुना है ? नहीं सुना होगा। शायद पढ़ा भी नहीं होगा। सबसे महान् वैज्ञानिक इस युग के आईस्टीन थे। वें रोज बाजा भी बजाते थे। क्यों ? 10 खरब सेल्स से हमारा मस्तिष्क बना है। उसमें मध्य मस्तिष्क, पश्चात्, मस्तिष्क और सन्मुख का मस्तिपक। गणित का एक साइड एक कला साइड संगीत से हमारा मस्तिष्क संतुलित रहता है और जो सेलस् हैं वह सक्रिय रहते है। और हमारी बुद्धि बढ़ती है और रोग दूर होते हैं। इसीलिए बांसुरी बजाते थे। स्वस्थ रखने के लिए गायको और रोग दूर होते है। इसीलिए बांसुरी बजाते थे, स्वस्थ रखने के लिए गाय को और उनका मनोरंजन करने के लिए। गोवर्द्धन पूजा में पहाड़ की पूजा करते हैं और गोबर की पूजा करते हैं। पहाड़ की पूजा और गोबर की पूजा क्यों। क्या गोबर भगवान् है ? वह तो पशु का मल है, गाय की टट्टी है। टट्टी की पूजा क्यों ? पहाड़ में तो पत्थर, मिट्टी हैं उसकी पूजा क्यों ? पहाड़ की पूजा माने पर्यावरण की सुरक्षा, जंगल में जो वृक्ष हैं उसको काटना नहीं उनको बढ़ाना है। और साइंस में सिद्ध हो गया कि यदि पेड़ को काटते है तो पर्यावरण संतुलन बिगड़ जाता है, गर्मी बढती है। वर्षा नहीं होती है, दुर्भिक्ष होता है। इसीलिए वृक्ष की सुरक्षा गोवर्द्धन की पूजा है। और गोबर की पूजा क्यों करते हो ? क्योंकि जो गोबर है वह सबसे उत्तम खाद है, प्राकृतिक खाद। केमिकल खाद डालने से जमीन बंजर हो जाती है और भोजन विषाक्त हो जाता है। तत्त्व और विटामिन कम हो जाते हैं इसलिए गोबर खाद डालना चाहिए।

कालियाँ नाग को कृष्ण ने मारा। क्यों ? कालिया नाग को कृष्ण ने मारा ? कालियाँ नाग एक सर्प था जो पानी को विषाक्त कर देता था। इसलिए कालियाँ नाग को कृष्ण ने मारा पानी को स्वच्छ करने के लिए, जल की शुद्धता के लिए। क्योंकि जल ही जीवन हैं। यदि पानी दूषित हो जाएँगा तो जीवन भी खतरे में पड़ जाएँगा। इसलिए कालियाँ नाग का दमन माने जो प्रदूषण है पानी सम्बन्धी उसको दूर करना। ये कालियाँ नाग का वध है।

एक जरासंघ था। जरासंघ को कृष्ण ने मारा। जरासंघ को क्यों मारा ? क्योंकि

जरासंध तानाशाही सम्राट था। उसमे सब राजाओं को बन्दी बना लिया था और भारत को परतंत्र कर लिया था। इसलिए जरासंध को मारकर भारत को स्वतंत्र राष्ट्र कर एक सार्वभौम लोकतंत्र राष्ट्र बनाया। कृष्ण ने गोपियों के वस्त्र हरण कर लिये थे। क्यों ? कृष्ण ने उस समय फैशन के नाम पर प्रचलित अर्द्धनग्नता, नग्नता और जो अश्लिलता चल रही थी उन्होंने दूर किया। उसके बाद नारायण कृष्ण महाभारत युद्ध में सारथी बने। कृष्ण नारायण थे और अर्जुन एक सामान्य राजकुमार थे। तो उनके सारथी क्यों बने ? इसलिए बने क्योंकि अर्जुन का पक्ष न्याय का था और दुर्योधन का पक्ष अन्याय का था। इसलिए उन्होंने यह सिद्ध किया कि मैं उनका पक्ष लूंगा जिनका पक्ष न्याय संगत है और जिनका पक्ष अन्याय संगत हैं उनके विरुद्ध में लड़ूँगा। इसलिए उन्होंने उनका साथ दिया। फिर उसके बाद उन्होंने युद्ध में विश्वरुप धारण किया। विश्वरूप धारण क्यों किया ? क्योंकि उन्होंने यह दिखा दिया कि हे कौरव! तुम्हारे पक्ष में बहुत लोग होते हुए भी मेरे पास बहुत शक्ति हैं। तुम यदि अन्याय--अत्याचार करोगे तो तुमको मैं अवश्य मारुँगा। तो ये विश्वरूप दिखाकर के डरा दिया। और उसके बाद युद्ध में भी गीता का उपदेश दिया। मानो भारत में युद्ध हो, शिक्षा हो, राजनीति हो, हर क्षेत्र में भारत में अहिंसा को प्रधानता दी गई है। इसलिए हमारा नारा है-- ''सत्यमेव जयते'' अहिंसा परमो धर्मः यतो धर्मः ततो जय। इसलिए कृष्ण के 16 कलाओं से हमें शिक्षा मिलती हैं कि ज्ञानी बनना चाहिए, गोपाल बनना चाहिए,पर्यावरण की सुरक्षा करनी चाहिए, अच्छे विद्यार्थी बनना चाहिए और अन्याय के विरुद्ध हमें लडना चाहिए। उसके साथ-साथ यदि बालक है तो बाल्यावस्था में उसे खेलना चाहिए। तभी जाकर हमारा सर्वांगीण विकास होगा ना केवल कृष्ण की पूजा करने से या केवल कृष्ण का जन्मोत्सव मनाने से हमारा कर्त्तव्य इतिश्री होगा। इसीलिए यह जन्माष्टमी से यह शिक्षा लेनी चाहिए कि आप लोग कृष्ण की पूजा करते हो, पूजा से भी महत्वपूर्ण है उनके जो आदर्श है उन आदर्शों को अपनाना चाहिये। उनका आदर्श है कि युद्ध में भी अहिंसा को अपनाना चाहिए। केवल जन्माष्टमी में मटका फोडने से जन्माष्टमी नहीं मनाई जाती है, कृष्ण के आदर्शों को अपनाकर ही जीवन की सफल बनाया जा सकता है।।

हमारे देश में यह उद्देश्य रहा-- 'सा विद्या या विमुक्तये'। विद्या अध्ययन किसके लिए करना चाहिए ? विद्या अध्ययन स्वयं को महान् बनाने के लिए, राष्ट्र को महान् बनाने के लिए व मोक्ष प्राप्त करने के लिए। .इसलिए कृष्ण जन्माष्टमी में आप लोगों को यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिये- जैसे कृष्ण में विभिन्न गुण थे (मुख्यतः

16 गुण) उनमें से कम से कम एक गुण भी आपके जीवन में आ जावें। क्योंकि Something is better than nothing यदि उनका पूरा व्यक्तित्व आप लोग अपनाते नहीं हो तो कुछ न कुछ आप लोगों को स्वीकार करना चाहिये। तब जाकर आप महान् बन सकते हैं॥

इसलिए बच्चों ! आप लोगों को कृष्ण जन्माष्टमी पर ये प्रतिज्ञा लेनी चाहिये कि स्वयं के लिए देश के लिए, गरीबों के लिए, गाय के लिए, पर्यावरण के लिए, पशु पक्षी के लिए कुछ ना कुछ करना चाहिये। इसलिए बच्चों ! मैं जहाँ भी जाता हूँ वहाँ स्कूल में जाता हूँ, बच्चों को पढ़ाता हूँ। जिससे हमारे बच्चे जो देश का भविष्य है उनका निर्माण हो।

कृष्ण ने उपरोक्त कला के साथ-साथ एक कला थी रास लीला। रास लीला के माध्यम से श्री कृष्ण ने नृत्य कला का प्रचार प्रसार किया। क्योंकि नृत्य एक ललित्य कला के साथ-साथ एक सर्वांगीण व्यायाम भी है। इससे शारीरिक, मानसिक विकास के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है। रासलीला में सब सामूहिक रूप में नृत्य करते हैं इससे संगठन, प्रेम, भाईचारा परस्पर सहयोग भी बढ़ता है।

नारायण कृष्ण महापुरुष के साथ-साथ एक महान् - समृद्धशाली राजा होने के बावजुद सुदामा जैसे गरीब की भी मित्रता को निभाया। दोनों बाल्यकाल में गुरु संदिपनी के यहाँ अध्ययन किया। आगे जाकर नारायण कृष्ण राजा बन गये तथा गरीबी के मारे सुदामा सहायता के लिये कुछ चावल पोटली में काँख में दबाकर कृष्ण के राजमहल में पहुँचे। तब कृष्ण प्रेम से उन्हें आलिंगन, स्वागत लिया, अपने सिंहासन पर बैठाकर पाद प्रक्षालन किया। एक राजमान्य अतिथिसे भी अधिक उनका आदर सत्कार किया। लज्जा के कारण सुदामा कुछ उनसे नहीं मांग पाये, तथापि कृष्ण ने उन्हें सम्पत्तिशाली बना दिया। इसके माध्यम से कृष्ण से यह सिद्ध किया कि मित्रता शुद्ध मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध है। मित्र भले गरीब हो, तथापि चक्रवर्ती को भी उनका आदर सत्कार तहदिल से करना चाहिये। इसे ही ''अतिथि देवो भव'' कहते है। क्या कृष्ण को मानने वाले उनके इस आदर्श को अपनाते है ? धनी या सत्ताधारी व्यक्ति भले वह शोषणकारी हो दुष्ट हो उसका तो आदर सत्कार करोंगे परन्तु मित्र की बात क्या, स्वयं के माता पिता, भाई बंधु को भी सम्मान नहीं देते हो। परन्तु किताब में रटोगे 'अतिथि देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव' इस सब दोगलेपन के कारण आज भारत दीन-हीन बनता जा रहा है। नारायण कृष्ण एक महान् योद्धा होते हुये भी अनावश्यक युद्ध नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने महाभारत युद्ध को टालने के लिये भरपूर प्रयास किये, शांतिदूत

बनकर कौरव की सभा में गये। उस समय में में भी वे दुर्योधन के यहाँ भोजन न लेकर विदुर के यहाँ भोजन किये। इससे उन्होंने यह सिद्ध किया कि जब तक शान्ति से काम चले तब तक शान्ति से ही काम करना चाहिए। युद्ध से जन-धन, सभ्यता, संस्कृति का भी विनाश होता है। उस समय कृष्ण विदुर के यहाँ इसलिए भोजन किये क्योंकि दुर्योधन के यहाँ भोजन करने से अन्याय का भोजन करना होता और अन्याय पक्ष का समर्थन होता।

कृष्ण का एक और महत्वपूर्ण रूप हैं योगीश्वर। उनका मत हैं 'योग कर्मषु कौशलम्' अर्थात् कर्म में कुशलता योग है। उन्होंने और भी कहा है- ''समत्व योगमुच्यते'' समता को याग कहते हैं। इससे यह सिद्ध किया है अनुकूल या प्रतिकूल अवस्था में भी मानसिक सन्तुलन को सही रखना या कर्तव्य में कुशलता योग है। कर्म में कुशलता कर्मयोग हैं तो साम्यभाव रखना राजयोग/आध्यात्मिक योग है।

आ. श्री कनकनंदीजी के आशीर्वाद से स्थापित धर्म-दर्शन-विज्ञान शोध संस्थान के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय गायत्री परिवार को क्रांति श्री की उपाधि प्रदान करते हुए आचार्य श्री